Chapter 7

अध्याय 7

शब्दकोश तथा अभिकलित्र (कंप्यूटर) शब्दावली

7.1 शब्दकोश का इतिहास तथा पृष्ठभूमि
7.1.1 कोश से तात्पर्य /परिभाषाएँ, उद्देश्य तथा उपयोगिता
7.1.2 आकलन

7.2 वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग

7.3 तकनीकी शब्दावली निर्माण के सिद्धांत

7.4 नागरी लिपि तथा संक्षिप्तीकरण
7.4.1 नागरी लिपि तथा संक्षिप्तीकरण
7.4.2 स्वतंत्र संक्षिप्ताक्षर (एक्रोनिम)

7.5 उपलब्ध कंप्यूटर शब्दकोश/शब्दावली का तुलनात्मक अध्ययन
7.5.1 तुलनात्मक अध्ययन
7.5.2 शब्दावली में सिमटती राजभाषा हिंदी
7.5.3 भविष्य की संभावनाएँ

7.6 कंप्यूटर शब्दावली (हिंदी कंप्यूटर शब्दावली सहित)
7.6.1 संक्षिप्ताक्षर तथा शब्द-विस्तार
7.6.2 अँग्रेजी से हिंदी कंप्यूटर शब्दावली

7.7 अध्याय 7 की संदर्भ सूची

शब्दकोश तथा
अभिकलित्र (कंप्यूटर)शब्दावली

7.1 शब्दकोश का इतिहास तथा पृष्ठभूमि :

प्राचीन काल से ही वैदिक साहित्य के क्लिष्ट शब्दों को स्पष्ट करने और उसकी निरुक्तियों (व्युत्पत्तियों) को स्पष्ट करने के लिए निघंटुओं व निरुक्त कोशों की संरचना होती आई है। तदंतर नाममालाएँ और पर्यायवाची कोशों का निर्माण किया गया। भारत में अँग्रेजी प्रशासन व अँग्रेजी कोशों के प्रभाव व सहजता स्वरूप संस्कृत में भी वर्णक्रमानुसारी (Alphabetical) शब्दकोशों की निर्मिति प्रारंभ की गई।

आज के वैज्ञानिक और प्रतिस्पर्धात्मक समय में भाषा और साहित्य के कोशों पर पर्याप्त बल दिया जा रहा है। नित नूतन आविष्कारों को नए नाम देने के लिए कोशों की आवश्यकता पड़ती है। कोश रचना-काल एवं पद्धति में भी मुद्रण तथा उपादेयता के विचार से व्यापक परिवर्तन हुआ है।

7.1.1 कोश से तात्पर्य, कोशों के उद्देश्य तथा उपयोगिता

कोश से तात्पर्य आधुनिक अर्थ में ऐसे शब्दों का संग्रह है, जिसमें शब्दों की मानक व चलन में वर्तनी, उच्चारण, व्याकरणीय बोध, व्युत्पत्ति, परिभाषा, अर्थ, प्रयोग, मुहावरे, सूक्तियाँ, लोकोक्तियाँ, विलोम तथा विशेष (यदि कोई हो) को एक विशेष उपयोगी वर्णक्रम या शब्दक्रम (word by word, letter by letter) व्यवस्थित किए जाते हैं। कुछेक प्रामाणिक परिभाषाएँ इस प्रकार हैं :

- व्याकरण से सिद्ध, वृद्ध परंपरा से प्रसिद्ध कैसे भी यौगिक, रूढ या यौग-रूढ शब्दों का अनेकार्थ के साथ संग्रह कोश में होता है। (नाममाला धनंजय, शंभूनाथ त्रिपाठी, सं. भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, 1950, पृ.7)
- जिस संग्रह में शब्दों के अर्थ, पर्याय, व्याख्याएँ आदि होती हैं, उन्हें **शब्दकोश** कहते हैं और जिस कोश में किसी शब्द के संबंध की विशेष ज्ञातव्य बातें विस्तार से दी जाती हैं या विषयवार उनका विस्तृत विवेचन होता है, उन्हें **ज्ञानकोश या विश्वकोश** कहते हैं। (हिंदी विश्वकोश, रामप्रसाद त्रिपाठी, सं. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, खंड-3, पृ.22)
- कोषः, शब्दकोषः, शब्दसंग्रहः, अभिधानं, शब्दग्रंथं, निर्वचनं, निघंटुः, A dictionary compiler, कौशिकः।
- (English-Sanskrit Dictionary, Vol.1, Monier Williams, London, Allen, 1851, p.180)

  A dictionary is **systematically arranged** list of specialized linguistic forms **compiled from the speech habits** of a given speech-community & commented on by the author in such a way that the **qualified**

reader understands the meaning. (Zgusta, L.Mannual of lexicography, Prague Academia, 1971, p. 197)

- A book dealing with the individual words of a language (or certain specified classes of them), so as to set forth **their orthography, pronunciation, signification & Use, their synonyms, deriviation & history** or at least some of these facts : for convenience of reference, the words are arranged in some stated order ... (the Oxford English Dictionary, James AM Murray ed. Oxford)
- Lexican is an inventory of the free forms of language arranged systematically, & against each form are shown **their functional load of meaning in each distinct meaningful situation.** (Katre, Sumitra Mangesh, Lexicography, Annamalai University, 1965, p.21)
- The most common designation for a lexicon in Sanskrit is Kosa, literally a treasure; the complete designation is '**Abhidh & kosa**', or simply Abhidhana (name), The Word '**Abhidhana**' as an abbreviation of Abhidhana Sastra (Lexicography is employed to designate the whole literature of this type). (Verma, Sidheshwar, BORI Journal, Poona, 1919, Vol.2, p. 69)
- A book listing words of a language with their meaning **in the same or another language, ...**

The term **dictionary** in one of its Latin forms (dictionaries, a collection of words) was used by an English scholar, John Garland, as title for a manuscript of Latin words to be learned by heart. (Ency. Britainia, Chicago, Ency., Brit. 1957, Vol.7, p. 336)

- वी.एस.आप्टे के कोश में कोश शब्द के पर्याय इस प्रकार हैं - 1) तरल पदार्थों को रखने का बर्तन, बाल्टी, 2) डोल, कटोरा, 3) पात्र, 4) संदूक, डोली, दराज, ट्रंक, 5) म्यान, तलवार, 6) पेटी, ढकना, ढक्कन, 7) भंडार, ढेर, 8) भंडारगृह, 9) खजाना, रुपया-पैसा रखने का स्थान, 10) निधि, रुपया, दौलत, 11) सोना, चाँदी, 12) शब्दकोश, शब्दार्थ संग्रह, शब्दावली, 13) अनखिला फूल, कली, 14) किसी फल की गिरी, 15) फली, 16) जायफल, कठोर-त्वचा, 17) रेशम का कोया, 18) झिल्ली, गर्भाशय, 19) अंडा, 20) अंडकोश, फोते, 21) शिश्न, 22) गेंद, गोला, 23) पाँच कोष जो सब मिल कर शरीर की रचना करते हैं - जिनमें आत्मा निवास करती है, अन्नमय, प्राणमय, आदि, 24) (विधि में) एक प्रकार की अपराधियों की अग्निपरीक्षा। (प्रसाद प्रकाशन, पूना, 1957, पृ. 306)

कोश शब्द सर्वप्रथम ऋग्वेद में प्रथम मंडल के 87वें सूक्त के दूसरे मंत्र में आया है। कोश शब्द का अर्थ उस समय 1) द्रव पदार्थ को संचित करने के लिए पात्र, 2) मेघ,

3) दूसरे स्थान का मध्य भाग, 4) आयुध रखने के लिए स्थान, 5) द्यु लोक और पृथ्वी लोक, 6) चक्र का मध्य भाग, 7) खजाना, 8) तलवार की म्यान, 9) फूल की पंखुडी आदि होता था। वर्तमान समय में कोश की दो वर्तनियाँ हैं - कोष और कोश। कोष शब्द खजाना के लिए प्रयोग होता है और कोश शब्द, शब्दकोश के लिए रूढ हो गया है। शेष सभी अर्थ लुप्तप्राय हो गए हैं।

शब्दों में (भिन्न-भिन्न संकल्पनाएँ या अर्थ) देखने का कार्य कोश का ही है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कोशों के सृजन का कार्य विद्वानों द्वारा किया गया।

शब्दकोश जैसी वस्तु समाज में विद्यमान अवश्य थी परंतु उसे कोश की संज्ञा कालांतर में दी गई। **अमर सिंह** ने अपने कोश को कोश न कह कर **नामलिंगानुशासन** कहा है। अर्थात् जो शब्द पहले से विद्यमान थे उन्हीं को नाम और लिंग के अनुशासन में बाँटा। **वाचस्पत्यम्** में कोश शब्द की विस्तृत प्रविष्टि है।

जिज्ञासुओं की हर प्रकार की शंका का समाधान कोशों से ही अपेक्षित है। राजा धन के कोष के बिना और विद्वान शब्दकोश के बिना महान संकट को प्राप्त होता है।

कोश-विज्ञान भाषा-विज्ञान की प्रमुख शाखा है। भाषा-विज्ञान में शब्द-विज्ञान तथा अर्थ-विज्ञान का विशेष महत्त्व है। भाषा के शब्द और उनके अर्थों को समझने तथा सुरक्षित रखने के लिए कोशों का सृजन हुआ।

संस्कृत के षट् शास्त्र - आयुर्वेद, ज्योतिष, साहित्य-शास्त्र, कोश विद्या, छंद शास्त्र तथा व्याकरण का संस्कृत साहित्य में सर्वोच्च स्थान है। इनमें कोश एक अमूल्य निधि है।

निघंटु को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि कोश रचना का कार्य कला और विज्ञान दोनों हैं। कोश की रचना छंदोबद्ध तरीके से की गई है और इसी परंपरा को अमरकोश तथा बाद में आने वाले कुछ कोशकारों ने अपनाया है। शब्दों की व्युत्पत्ति, इतिहास, अर्थ, प्रयोग आदि का उल्लेख देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक वैज्ञानिक कार्य भी है।

शब्द जब आते हैं तो किसी न किसी रूप में अपने इतिहास को अपने साथ ही ले कर आते हैं। भाषा-वैज्ञानिक इसी का अध्ययन करते हैं। कोशकार इसके अतिरिक्त भी विवेक रखता है। वह शब्दार्थ-विज्ञान को विभिन्न विषयों के संबंध में भी समझ कर प्रसंग सहित उसका प्रयोग बतलाता है। कोश-विज्ञान तथा शब्दार्थ-विज्ञान इस प्रकार भिन्न हैं परंतु दोनों ही एक ही परिवार अर्थात् भाषा-विज्ञान की शाखा है। शब्द की रचना संस्कृत में दो तरह से मानी गई हैं : (1) धातु से निकले शब्द - कृदंत, (2) शब्दों से बने शब्द - तद्धित। धातु से निकले हुए शब्द बहुत ही वैज्ञानिक प्रणाली से निर्मित हैं। दूसरे प्रकार के शब्दों के नियम भी व्याकरण में ही बने हैं। उणादि प्रक्रिया भी शब्दों को धातुज मानती है। उणादि नियम के अनुसार शब्दों में प्रकृति की कल्पना पहले करें, बाद में प्रत्यय की, कार्यों को देख कर प्रकृति और प्रत्यय में अनुबंध लगा है।

भारत में कोशों की परंपरा वैदिक काल से प्रारंभ हुई थी। निघंटु इसका प्रमाण है। निघंटु से पूर्व भी श्री यास्के ने कुछ कोशकारों के नाम गिनाए हैं। उन विद्वानों को आज के कंप्यूटर युग का भले ही अहसास न हुआ हो परंतु उन्होने यह जरूर अनुमान लगा लिया होगा कि भाषा का रूप आने वाली पीढ़ियों में इतना विकसित हो जाएगा कि शब्द भंडार को कोश-रूपी तिजोरी में बंद करना पड़ेगा। भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में शोध की विश्वव्यापी दृष्टि से यह बात भी सामने आई कि लैटिन और ग्रीक के शब्दों ने भी वैदिक शब्दों का साहचर्य पाया था।

कंप्यूटर बनाने वाले विद्वानों के शोध के अनुसार कंप्यूटर प्रणाली को बनाने और चलाने के लिए बड़े से बड़े (अधिक शब्दों से संपन्न) कोशों की पूर्वापेक्षा निश्चित है। अमरीकी वैज्ञानिक श्री रिक ब्रिग्ज के अनुसार संस्कृत के विद्वान ऐसे कंप्यूटर-तंत्री थे, जिनके पास सॉफ्टवेयर तो था, लेकिन हार्डवेयर नहीं था।

संस्कृत के विद्वानों ने तो सदियों पूर्व एक सूक्ति दी है जिसने व्याकरण नहीं पढ़ा वह अंधा है, जिसे कोश का ज्ञान नहीं वह बहरा है, जो साहित्य के ज्ञान से रहित है वह लंगड़ा है और जिसे तर्क का ज्ञान नहीं है वह गूँगा है।

हिंदी साहित्य पर संस्कृत का व्यापक प्रभाव है। वर्तमान में व्यवहार की संपूर्ण शब्दावली आदि संस्कृत के शब्दों द्वारा ही अपनाई जा रही है। ऐसी स्थिति में संस्कृत कोश के शब्द संकलन का कार्य कोशकार को व्यवहार को दृष्टिगत रखते हुए करना होगा। उसी शब्द भंडार में से साहित्यकार, कवि, सरकारी कामकाज के कर्मचारी आदि अपने संदर्भ अनुसार शब्दों को प्रयोग में लाने हेतु चुन सकते हैं। श्री रामचंद्र वर्मा के मतानुसार "शब्द वस्तुत: शब्दकोश के शरीर मात्र के रूप में होते हैं, उसके प्राण या आत्मा का स्थान अर्थों और व्याख्याओं को ही प्राप्त है।" विज्ञान की उन्नति के परिणामस्वरूप संसार के सभी देशों के लोग हर भाषा या उसका आशय समझना चाहते हैं। अत: कोशों का महत्तव दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। वही कोश उपयुक्त माना जाता है जिसमें अधिक से अधिक सार्थक शब्दों का संग्रह हो ताकि प्रयोक्ता ठीक-ठीक आशय समझ सकें।

भारत की राजभाषा हिंदी होने के कारण संस्कृत के विशिष्ट शब्दों का प्रयोग उचित समझा जाता है क्योंकि संस्कृत शब्दावली संपूर्ण भारतीय भाषाओं में विशेषकर दक्षिण में अधिक समझी जाती है। हिंदी को तो संस्कृत की पुत्री कहा ही जाता है। संस्कृत में एक गुण और भी है कि उपसर्ग और प्रत्यय के प्रयोग से शब्दावली संबंधी कई शब्द बनाए जा सकते हैं। संस्कृत से मिलते-जुलते शब्दों को जिन्हें तत्सम शब्द कहा जाता है उनका प्रयोग भी विभिन्न विषयों में किया जाता है। बोलचाल की भाषा से लेकर लेखन कला एवं कंप्यूटर तक में संस्कृत भाषा के शब्दों का सहारा लिया जाता है। वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने कंप्यूटर प्रणाली का उपयोग करके प्रशासन संबंधी शब्द संग्रह के अतिरिक्त विभिन्न विषयों के शब्द कोश तथा परिभाषा कोशों के निर्माण का कार्य आरंभ किया है। ऐसे क्रांतिकारी समय में कंप्यूटर प्रणाली के लिए शब्द संग्रह का कार्य एक चुनौती है, यही चुनौती कोश कार्य के लिए भी मानी जा सकती है। कोशकार अनुक्रमणिका बनाने के लिए भी शब्द संग्रह के कार्य को ही महत्व देगा।

सन् 1961 में हुए एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में 1952 मातृभाषाएँ हैं। इन सभी भाषाओं की अपनी बोलियाँ और शैलियाँ हैं। इन भाषाओं के व्याकरणों और कोशों की आवश्यकता संदर्भ सामग्री के रूप में होती है। कोशों के अतिरिक्त शायद ही कोई संदर्भ ग्रंथ हो, जो जनसाधारण के लिए उपयोगी सिद्ध होता है।

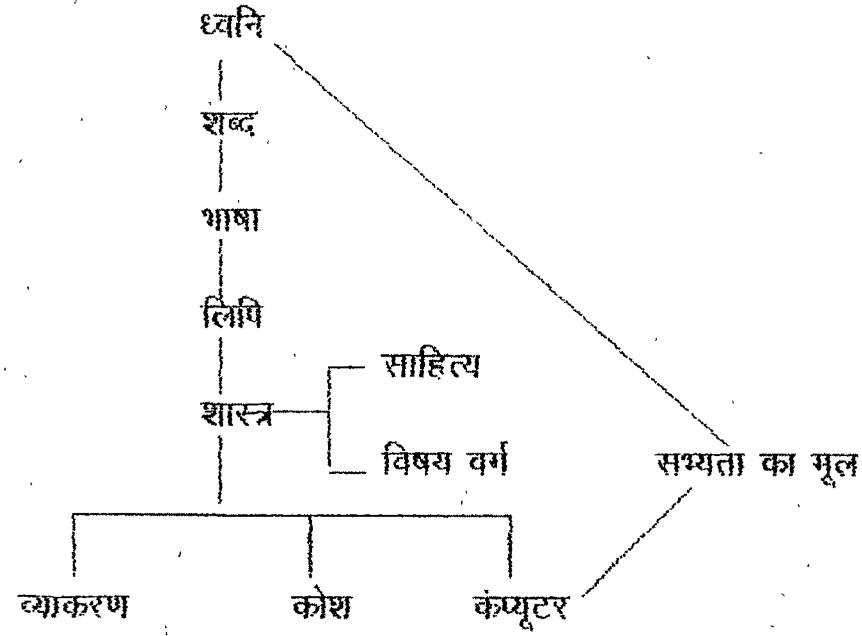

संस्कृत में तो कोशों को शब्द रत्नाकर, शब्द समुच्चय, शब्द कल्पद्रुम अर्थात् शब्दों का सागर, कोश कल्पतरू अर्थात् विश्व को उजाला देने वाला, विश्वलोचन अर्थात् संसार का चक्षु आदि नामों से पुकारा जाता है।

कोश संदर्भ ग्रंथ होते हैं, शब्दों के अर्थ, शब्द की व्युत्पत्ति, परिभाषा, विलोमार्थ, भिन्नार्थ आदि हर प्रकार की जानकारी कोशों से मिल सकती हैं। एक विषय में एक शब्द का अमुक अर्थ है और दूसरे में कुछ और, यह जानकारी कोशों से ही प्राप्त हो सकती है।

द्विभाषी तथा बहुभाषी कोश अन्य भाषा जानने वालों को समीप लाते हैं, क्योंकि इस प्रकार के कोशों से दूसरी भाषा सीखी जा सकती है। ज्ञान की कोई शाखा ऐसी नहीं है जहाँ कोशों की महत्ता को नकारा जा सके।

डॉ.पुष्प लता तनेजा के अनुसार, भाषा, साहित्य, भिन्न विषय, विज्ञान आदि का संवर्धन कोशों के आधार पर हुआ। संस्कृत साहित्य के कोशकारों के मस्तिष्क में भाषा विषयक, चिकित्सा शास्त्र विषयक, वनस्पति शास्त्र विषयक, साहित्य विषयक, न्याय शास्त्र विषयक शब्दों, अर्थों व अन्य जानकारी देने के लिए कंप्यूटर की व्यवस्था का विचार अवश्य रहा होगा। आज कंप्यूटर की देन इसी प्रकार के ज्ञान पर आधारित है, कंप्यूटर द्वारा जब भिन्न-भिन्न विषयों के एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद किए जाते हैं तो उसमें शब्दों के पर्याय, विलोम व भिन्नार्थ पहले से भर दिए जाते हैं और आवश्यकतानुसार निकाले जाते हैं।

7.1.2 आकलन

वैदिक काल में निघंटुओं के रूप में कोश-विद्या का प्रादुर्भाव भारत में हो गया था। निघंटु वैदिक ऋचाओं के शब्दों के संग्रह मात्र थे। उस समय कोशों का यही आदि रूप था। वैदिक संहिताओं में प्रयुक्त कुछ चयनित शब्दों की व्युत्पत्ति व अर्थ के निर्देश **निरुक्त** में किए गए। **यास्काचार्य** के अनुसार सभी शब्द धातुज हैं, इस कार्य में **यास्क** ने शब्दों के अर्थपक्ष पर बल दिया है। उन्होंने पद के चार भेद बताए - नाम और आख्यात, उपसर्ग और निपात। **आचार्य शाकटायन** ने **"सर्वाणि नमामि आख्यातजानि"** सूत्र द्वारा संस्कृत भाषा के समस्त शब्दों का रहस्य खोल दिया। व्युत्पत्ति कोशों में शब्दों का ऐतिहासिक अध्ययन करते समय कोशकारों ने शब्दों की वैज्ञानिक उत्पत्ति दर्शाई। इस कार्य में उन्होंने अनुमान का सहारा नहीं लिया। शब्दों की पूरी पहचान के लिए यह अध्ययन आवश्यक व अनिवार्य था।

लौकिक संस्कृत मे **अमरकोश** का सर्वोच्च स्थान है। **अमरकोश** में वैदिक संस्कृत के साथ लौकिक संस्कृत के कुछ शब्द तथा कुछ प्राकृत शब्दों को स्थान मिला। **अमरकोश** की रचना के पश्चात उसी परंपरा में कोशों के निर्माण की एक होड़ लग गई और इस क्षेत्र को कई दिशाएँ मिली।

उस काल में संस्कृत कोश साहित्य में शब्दों के प्रस्तुतीकरण का ढंग साहित्यकारों, विशेषकर कवियों के लिए उपयोगी था, क्योंकि प्राचीन परंपरा वाले कोश अधिकतर पर्यायवादी हैं तथा पद्यों में हैं। **डॉ. सिद्धेश्वर वर्मा** के शब्दों में **"the later extent works on Sanskrit lexicography are mostly nothing else than collection of important and rare words for the use of poets"**. दुर्लभ, कठिन एवं विचित्र शब्द ढूँढ कर प्रस्तुत करना कवियों की प्रतिभा का सूचक था। कोशकारों ने भी उनकी सहायता के लिए सर्वप्रथम समानार्थक कोशों का निर्माण किया, जिनमें शब्दों का प्रस्तुतीकरण विषय या विभाग क्रम से किया गया। उस समय शब्दों के लिंग-निर्धारण की समस्या को **अमरसिंह** तथा अन्य कोशकारों ने बड़ी चतुराई से हल किया। कुछ कोशकारों ने शब्दों को प्रथमा विभक्ति के साथ प्रस्तुत कर लिंग-निर्धारण की बुद्धिमत्ता दिखलाई और कुछ ने लिंग दर्शाने के लिए संज्ञा शब्दों के साथ पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुसकलिंग, क्लीव आदि के संकेत दिए। दोनों लिंगों मे प्रयुक्त होने वाले शब्दों के साथ **'अस्त्रियाम्'** लिखकर स्पष्ट किया।

इस समय तक कोश वर्णक्रम से नहीं थे और शब्दों के संसार में कोशकारों को शब्दचयन की स्वतंत्रता थी। वे किसी भी शब्द को अपनी नामावली में शामिल कर लेते थे और संबंधित विषयों तथा वर्गों के अंतर्गत रख देते थे। विषयगत कोश भी बनने लगे। औषधि विषयक कोश की तो संस्कृत में भरमार थी।

पर्यायवाची कोशों के पश्चात **अनेकार्थी** या **नानार्थी कोशों** का समय आया। सामान्य तथा विषयगत सभी प्रकार के कोशों में **नानार्थी कोशों** का समावेश होने लगा। एक ही प्रकार के भिन्न मात्रा वाले **भिन्नार्थी** या **अनेकार्थी कोश** भी बनने लगे, जैसे **पुरुषोत्तम देव** का **शब्द-भेद-प्रकाश**। पर्यायवाची कोशों से इतर कोशों के माध्यम से विद्वानों ने अपनी विद्वता का प्रदर्शन किया। कोशों की शैली में काफी परिवर्तन आया। संख्या की दृष्टि से **नानार्थी कोश पर्यायवाची कोशों** से कहीं अधिक थे।

भाषा में ऐतिहासिक और भौगोलिक कारणों से एक शब्द कई बार दिखाई देते हैं। शब्दों की यात्रा के इतिहास से ज्ञात होता है कि शब्दों में किस प्रकार परिवर्तन होते हैं और अर्थभेद होते हैं। संस्कृत में तो एक शब्द को ले कर अनेक अर्थ प्रकट करने की परंपरा प्राचीन है। शब्दों का क्रमीकरण वर्गानुसार था, परंतु कहीं-कहीं वर्णानुसार क्रमीकरण की पद्धति आरंभ हो गई थी। कहीं-कहीं वर्णक्रम आरंभ किया गया, परंतु यत्र-तत्र क्रम भंग हो गया। संस्कृत कोशों में शब्दों के अंत्याक्षर के अनुसार शब्द चयन पद्धति से भी कोशों का निर्माण कार्य हुआ। इस पद्धति का आरंभ केवल संस्कृत कोशों से हुआ है। उदाहरणार्थ 12वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में **धरणिधर** का **धरणि कोश** इसी प्रकृति का है। एकाक्षर, द्वयक्षर व त्रयक्षर आदि शब्दों के कोश भी बनें। एकाक्षर शब्दों जैसे का, की, कु, आदि शब्दों के अर्थ भी दिए गए। जैसे **पुरुषोत्तम देव का एकाक्षर कोश, जैन कवि अमरकवींद्र की एकाक्षर नाममाला, सौभरि का एकाक्षर व द्वयक्षर नाममाला।** शब्दों की अधिक जानकारी व व्याख्या लेखों के रूप में देने वाले वर्णक कोश भी बने, जैसे - वर्णदेशना, नाटक लक्षण रत्नकोश आदि। ऐसे कोश भी हैं जो विपुलकाय होने के कारण विश्वकोश की भाँति विस्तृत विवरण प्रदान करते हैं, जैसे- **शाश्वत कोश, मेदिनीकोश, विश्वप्रकाश** आदि।

कोशों में अधिकतर संज्ञावाची शब्दों का समावेश हुआ, परंतु कुछ कोश केवल क्रियाओं के अर्थ दर्शाते हैं। ऐसे कोशों में दो कोश प्रसिद्ध हैं - **1.भट्टमल की आख्यात-चंद्रिका 2. हलायुद्ध** का **कवि रहस्य**। पहला कोश **चौखंबा काशी** से तथा दूसरा **बम्बई** से विक्रमी संवत् 1992 में प्रकाशित हुआ है। कोशकार शब्दों की वर्तनी के बारे में चिंतित थे। **पुरुषोत्तम देव** ने **"वर्णदेशना"** नाम से कोश इसी विषय पर लिखा है। **द्विरूपकोश** तथा **शब्दभेद प्रकाश** भी वर्तनी का ज्ञान कराते हैं, साथ ही वह यह भी बताते हैं कि भिन्न मात्रा या समान उच्चारण वाले शब्दों के भिन्न अर्थ या अर्थ के अनर्थ भी हो सकते हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन कोशकारों को विषयों का विस्तृत ज्ञान था। शब्द-चयन में वे अमुक विषय के हर प्रकार के शब्द संकलित कर लेते थे। उदाहरणार्थ **केशव के कल्पद्रु कोश** (वडोदरा से **रामावतार शर्मा** की प्रस्तावना के साथ 1928 तथा 1932 में दो भागों में प्रकाशित हैं) के हस्ति प्रकरण में श्लोक संख्या 142 से 188 तक हाथियों के नाम, उनके उत्पत्ति स्थानों का निर्देश, उनकी भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ, जातियों की पहचान आदि को विस्तार से समझाया गया है। चिकित्सा शास्त्र संबंधी कोशों में कोशकारों ने विभिन्न जड़ी-बूटियों के नामों के साथ उनके गुण-दोषों तथा विभिन्न रोगों में प्रयोग विधियों को भी बताया है।

अपने पूर्ववर्ती विद्वानों तथा कोशकारों की कृतियों के आधार पर भी परवर्ती विद्वानों ने कोश लिखे। **शाश्वत कोश** अर्थात् शाश्वत के अनेकार्थ समुच्चय में लेखक ने स्वयं स्वीकारी है कि 'मैंने तीन व्याकरणों को देखा, पाँच **लिंगानुशासनों** का अध्ययन किया और उसके पश्चात् यह कोश लिखा।'

कोश साहित्य काफी लोकप्रिय रहा, इसका प्रमाण यह है कि कोशों पर **अनंत भाष्य व टीकाएं** लिखी गई जिससे अव्युत्पन्न तथा गूढार्थ वाले शब्द स्पष्ट हो जाते हैं। कोशों के पूरक ग्रंथ भी लिखे गए. **'त्रिकांड शेष' अमरपूरक** ग्रंथ है। इसमें अप्रचलित शब्दों की ओर

भी ध्यान दिया गया। '**हारावली**' में भी अप्रचलित तथा असामान्य शब्दों का संकलन किया गया है। **अमरकोश** व **निरूक्त** पर संस्कृत के अलावा हिंदी और अँग्रेजी भाषा मे भी टीकाएं लिखी गई हैं। संस्कृत मूलक विदेशी भाषी कोश तथा अन्य भाषा मूलक संस्कृत कोश भी लिखे जाने लगे, विशेषकर जर्मन, फारसी व फ्रेंच में। पाली तथा प्राकृत भाषा के कोशों का निर्माण भी हुआ। **श्री टी.डब्ल्यू. राइस डेविड्स ने पाली-इंग्लिश कोश** की रचना की।

कालांतर में कोशकारों ने कोशों की अनुक्रमणिकाओं की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अनुक्रमणिकाएँ भी बनाईं।

प्राचीन कोशकारों में एक समान विशेषता यह है कि हर कोशकार अपने इष्ट देवता की आराधना के बाद कोशकार्य आरंभ करता है। रचना का प्रारंभिक भाग किसी न किसी देवता की आराधना के लिए होता है परंतु संस्कृत कोशकार अपने बारे में बहुत कम कहते हैं या कुछ नहीं कहते। समय और काल का आसानी से पता नहीं चलता। केवल उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर अनुमान लगाना पड़ता है, जैसे कुछ विद्वानों के मतानुसार **निघंटु** के रचयिता **प्रजापति कश्यप** हैं।

वर्तमान समय की वर्णक्रम पद्धति का आरंभ तो संस्कृत कोशों में **अमरकोश** की रचना के साथ ही हो चुका था। **अमरकोश** के तृतीय कांड में वर्णक्रम का प्रारंभिक रूप दिखाई पड़ता है। पाश्चात्य देशों ने इस पद्धति को बढ़ावा दिया। आधुनिक कोशों में लोकप्रियता, सुगमता और आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए कोशों का निर्माण वर्णक्रम पद्धति से हो रहा है।

एकभाषी के अतिरिक्त द्विभाषी व बहुभाषी कोशों के निर्माण कार्य को वर्णक्रम पद्धति से बढ़ावा मिला। शब्द अपने आप वर्णक्रम से यथास्थान आ जाते हैं। कोश-निर्माण कार्य को पूर्ण प्रतिष्ठा और नई दृष्टि मिली है। ज्ञान-विज्ञान की सामग्री वर्णानुक्रम से व्यवस्थित कर कोशों से लेकर विश्वकोशों का निर्माण हो रहा है। विषय-सूचियों तथा अनेक प्रकार की अनुक्रमणिकाओं का सृजन-कार्य भी इस पद्धति से होने लगा है। बड़े-बड़े ग्रंथों के परिशिष्ट में लेखक शब्दानुक्रमणिका, विषयानुक्रमणिका, श्लोकानुक्रमणिका तथा अन्य कई प्रकार की अनुक्रमणिकाएं और संदर्भ ग्रंथ-सूचियॉ देने लगे हैं।

एक **अच्छे कोश में** शब्द के क्रम, अर्थ क्रम, शब्द की व्याकरणिक कोटि, उच्चारण, वर्तनी, प्रयोग, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, चित्र, रेखाचित्र, उपसर्ग, प्रत्यय आदि सभी सूचनाएँ दी जानी चाहिए। सामान्यतः प्रचलन के आधार पर मुख्य अर्थ पहले रखा जाता है और गौण अर्थ बाद मे। इस संबंध में यह देखना होता है कि कोश का प्रकार क्या है। **विज्ञान के मामले में** भी चूँकि आजकल आवश्यकता और लोकप्रियता तथा भाषा सीखने की दृष्टि से द्विभाषी तथा बहुभाषी कोश बनने लगे हैं, इन कोशों में सर्वप्रथम मूलभाषा का अन्य भाषा में पर्याय देने से काम चल जाता है, बाद में महत्त्वपूर्ण सूचनाएं दी जा सकती है। कोश यदि विषय से संबंधित हो तो विषयगत कोशों में कोशकार को विषय से संबंधित जानकारी होना आवश्यक है ताकि विषय से संबंधित समस्त सूचनाएं कोशों के अंतर्गत सम्मिलित की जा सके।

डॉ. पुष्प लता तनेजा के अनुसार "संस्कृत कोश कंप्यूटर या कंप्यूटर जैसे तंत्र के लिए सर्वथा उपयुक्त है। यदि इस वैज्ञानिक भाषा के कोशकारों के पास तंत्र होते तो आज भारत जिस प्रकार कोश साहित्य में अग्रणी माना जाता है उसी प्रकार **भाषिक कंप्यूटर** के क्षेत्र में भी भारत का ही नाम संसार में अग्रणी होता। संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता, शब्दों की उत्पत्ति अर्थात् धातुओं, प्रत्ययों तथा उपसर्गों आदि से सिद्ध की जा सकती है। एक ही धातु से कई शब्द बनते हैं।"

संस्कृत में मूल धातुएँ 1700 से लेकर 2000 तक हैं। शब्द निर्माण करने वाले 80 के लगभग प्रत्यय हैं। केवल प्रत्ययों का बोध कराने वाले कोश भी उपलब्ध हैं, उपसर्गों की संख्या 20 हैं। अर्थात् संस्कृत से हमें **एक धातु से कम से कम 80 x 20 x 1700 शब्द सुगमता से प्राप्त हो सकते हैं**। एक साथ दो उपसर्ग तथा प्रत्ययों को जोड़कर भी शब्द बनते हैं। इससे शब्दों की संख्या और अधिक हो सकती हैं, जैसे - उपर्युल्लिखित शब्द में उपरि+उत्+लिख् धातु + क्त प्रत्यय है। भाषा में ऐसे शब्द-युग्मों का प्रचलन भी है जिनमें क्रम परिवर्तन से शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं। जैसे - हास्यजनक या हँसी उत्पन्न करने वाला, किंतु मंद हास्य का अर्थ है हल्की हँसी।

दो शब्दों के योग से भी एक समस्त पद बन सकता है, जैसे - विचार-विमर्श। संस्कृत भाषा का एक बहुत बड़ा गुण है कि इस भाषा में सभी शब्द सार्थक होते हैं। संस्कृत की मूल धातुएँ, उपसर्ग व प्रत्ययादि जिज्ञासुओं की शंका का समाधान करने में सक्षम हैं। ऐसे नियम कंप्यूटर के लिए उपयोगी हैं। कंप्यूटर में स्मृति (Memory) का भाग भी होता है जिसमें शब्द वैसे के वैसे पड़े रहते हैं और समय आने पर सहायक होते हैं। कंप्यूटर का यह गुण है कि हम भूल सकते हैं पर कंप्यूटर नहीं भूलता। इसमें ग्रहण, विश्लेषण तथा संश्लेषण का क्रम चलता रहता है। 'कंप्यूटर के लिए संस्कृत को सर्वश्रेष्ठ भाषा कहा गया है। भारतीय भाषाओं में संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्राचुर्य है और यह विधि (डाटा संचय/शब्द संचय) संस्कृत के शब्दों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।'

प्राचीन काल में कुछ कोश राज-दरबारों के प्रोत्साहन से बने। केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने कई हिंदी-मूलक-द्विभाषी व त्रिभाषी कोशों का निर्माण किया है।[1]

7.2 वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग

स्वतंत्रता के पश्चात संविधान के निर्माताओं का ध्यान देश की सभी प्रमुख भाषाओं के विकास की ओर गया। हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई और केंद्रीय सरकार को हिंदी का विकास, प्रचार-प्रसार तथा इसे समृद्ध करने का दायित्व सौंपा गया। तदनुसार भारत सरकार के तत्कालीन केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने संविधान के अनुच्छेद 351 के अधीन हिंदी के विकास एवं समृद्धि की अनेक योजनाओं को प्रारंभ किया। इन योजनाओ में से एक योजना हिंदी और अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं के लिए समान वैज्ञानिक शब्दावली का विकास करने से संबंधित थी।

हिंदी तथा अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक शब्दावली का विकास करने और उच्च शिक्षा में माध्यम परिवर्तन को संभव एवं सुकर बनाने के लिए पाठ्य-पुस्तकों, पूरक सामग्री और संदर्भ-ग्रंथों का निर्माण एवं प्रकाशन करने के लिए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के स्थाई आयोग की स्थापना राष्ट्रपति के 27 अप्रैल,1960 के आदेश के तहत अक्टूबर,1961 में की गई। राष्ट्रीय महत्व की यह संस्था इस समय भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यमिक शिक्षा और उच्चतर शिक्षा विभाग के एक अंग के रूप में कार्यरत है।

आयोग के प्रमुख कार्य :

(क) पारिभाषिक शब्दावली

- हिंदी तथा अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली का निर्माण/विकास।
- अखिल भारतीय शब्दावली की पहचान एवं सभी भारतीय भाषाओं में इसका अधिकाधिक प्रचार और प्रयोग।
- आयोग द्वारा निर्मित समस्त शब्दावली को आयोग के वेबसाइट (इंटरनेट) पर उपलब्ध कराना।
- शब्दावली संबंधी परामर्श एवं सूचना सेवा।
- हिंदी एवं समस्त आधुनिक भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का अद्यतनीकरण, मानकीकरण एवं सरलीकरण।

(ख) वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य का प्रकाशन

- ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न विषयों में आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली का प्रयोग करते हुए हिंदी तथा अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं में विश्वविद्यालय-स्तरीय ग्रंथों एवं संदर्भ सामग्री का निर्माण तथा प्रकाशन।
- विभिन्न राज्यों की ग्रंथ अकादमियों तथा पाठ्य-पुस्तक मंडलों के विश्वविद्यालय-स्तरीय ग्रंथ-निर्माण कार्य का समन्वय तथा अनुवीक्षण (मॉनीटरन)।
- विभिन्न विषयों के परिभाषा-कोशों का निर्माण।
- वैज्ञानिक तथा मानविकी विषयों पर छात्रोपयोगी पाठमालाओं, चयनिकाओं तथा पूरक साहित्य का प्रकाशन।
- आयोग के समस्त प्रकाशनों की कंपैक्ट डिस्क (सी.डी.) तैयार करवाना।
- हिंदी में वैज्ञानिक शैली के विकास को बढ़ावा देने के लिए "विज्ञान गरिमा सिंधु" एवं "ज्ञान गरिमा सिंधु" पत्रिकाओं का प्रकाशन।

(ग) शब्दावली कार्यशालाएँ

- विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय के अध्यापकों/लेखकों के लिए शब्दावली कार्यशालाओं का आयोजन।

* प्रशासनिक कार्यों में संलग्न अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए शब्दावली कार्यशालाओं का आयोजन।

(घ) शब्दावली क्लबों की स्थापना

* हिंदी ग्रंथ अकादमियों, पाठ्य-पुस्तक मंडलों, विश्वविद्यालयों में स्थित सेलों में शब्दावली क्लबों की स्थापना।

(ङ) अन्य

* आयुर्विज्ञान में आम प्रयोग के शब्दों और वाक्यांशों के भारतीय-भाषाई पर्यायों कासंकलन। विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन।
* आयोग तथा ग्रंथ अकादमियों के प्रकाशनों का प्रचार और उनकी बिक्री की व्यवस्था। आयोग की समस्त योजनाओं एवं कार्यप्रणाली का ऑटोमेशन एवं आधुनिकीकरण।

आयोग का संपर्क-पता : पश्चिमी खंड-VII, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली - 110066[2]

7.3 तकनीकी शब्दावली निर्माण के सिद्धांत

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के स्थायी आयोग द्वारा स्वीकृत शब्दावली-निर्माण के सिद्धांत

1. अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को यथासंभव उनके प्रचलित अँग्रेजी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के अंतर्गत निम्नलिखित उदाहरण दिए जा सकते हैं :-

क) तत्वों और यौगिकों के नाम जैसे हाइड्रोजन, कार्बन डाइ-ऑक्साइड आदि ;

ख) तौल और माप की इकाइयाँ और भौतिक परिमाण की इकाइयाँ जैसे डाइन, कैलॉरी, एम्पियर आदि ;

ग) ऐसे शब्द जो व्यक्तियों के नाम पर बनाए गए हैं जैसे,
मार्क्सवाद (कार्ल मार्क्स), ब्रेल (ब्रेल), बॉयकाट (कैप्टेन बॉयकाट),
गिलोटिन (डॉ.गिलोटिन), गेरीमैंडर (मि.गेरी),
एम्पियर (मि. एम्पियर), फारेनहाइट तापक्रम (मि.फारेनहाइट) आदि ;

घ) वनस्पति-विज्ञान, प्राणि-विज्ञान, भूविज्ञान, आदि की द्विपदी नामावली ;

ङ) स्थिरांक जैसे g, आदि ;

च) ऐसे अन्य शब्द जिनका आमतौर पर सारे संसार में व्यवहार हो रहा है जैसे रैडियो, पेट्रोल, रेडार, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन आदि ;

छ) गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक, चिह्न और सूत्र, जैसे साइन, कोसाइन, टेन्जेन्ट, लॉग आदि ;

(गणितीय संक्रियाओं में प्रयुक्त अक्षर रोमन या ग्रीक वर्णमाला के होने चाहिए)।

2. प्रतीक, रोमन लिपि में अन्तर्राष्ट्रीय रूप में ही रखे जाएँगे परन्तु संक्षिप्त रूप नागरी और मानक रूपों में भी, विशेषत: साधारण तौल और माप में लिखे जा सकते हैं, सेन्टीमीटर का प्रतीक जैसे cm. हिंदी में भी ऐसे ही प्रयुक्त होगा परन्तु नागरी संक्षिप्त रूप

से.मी. हो सकता है। यह सिद्धांत बाल-साहित्य और लोकप्रिय पुस्तकों में अपनाया जाएगा, परन्तु विज्ञान और प्रौद्योगिकी की मानक पुस्तकों में केवल अन्तर्राष्ट्रीय प्रतीक, जैसे cm. ही प्रयुक्त करना चाहिए।

3. ज्यामितीय आकृतियों में भारतीय लिपियों के अक्षर प्रयुक्त किए जा सकते हैं जैसे : क, ख, ग या अ, ब, स परन्तु त्रिकोणमितीय संबंधों में केवल रोमन अथवा ग्रीक अक्षर ही प्रयुक्त करने चाहिए, जैसे साइन A, कॉस B आदि।

4. संकल्पनाओं को व्यक्त करने वाले शब्दों का सामान्यतः अनुवाद किया जाना चाहिए।

5. हिंदी पर्यायों का चुनाव करते समय सरलता, अर्थ की परिशुद्धता और सुबोधता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। सुधार-विरोधी प्रवृत्तियों से बचना चाहिए।

6. सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों में यथासंभव अधिकाधिक एकरूपता लाना ही इसका उद्देश्य होना चाहिए और इसके लिए ऐसे शब्द अपनाने चाहिए जो :-

क) अधिक से अधिक प्रादेशिक भाषाओं में प्रयुक्त होते हों, और

ख) संस्कृत धातुओं पर आधारित हों।

7. ऐसे देशी शब्द जो सामान्य प्रयोग के पारिभाषिक शब्दों के स्थान पर हमारी भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं जैसे, telegraph/telegram के लिए तार, continent के लिए महाद्वीप, post के लिए डाक आदि, इसी रूप में व्यवहार में लाए जाने चाहिए।

8. अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं के ऐसे विदेशी शब्द जो भारतीय भाषाओं मे प्रचलित हो गए हैं, जैसे टिकट, सिगनल, पेंशन, पुलिस, ब्यूरो, रेस्तरां, डीलक्स आदि, इसी रूप में अपनाए जाने चाहिए।

9. **अंतरराष्ट्रीय शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण** -- अंग्रेजी शब्दों का लिप्यंतरण इतना जटिल नहीं होना चाहिए कि उसके कारण वर्तमान देवनागरी वर्णों में नए चिह्न व प्रतीक शामिल करने की आवश्यकता पड़े। शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण अंग्रेजी उच्चारण के अधिकाधिक अनुरूप होना चाहिए और उनमें ऐसे परिवर्तन किए जाएं जो भारत के शिक्षित वर्ग में प्रचलित हों।

10. **लिंग** -- हिंदी में अपनाए गए अंतरराष्ट्रीय शब्दों को, अन्यथा कारण न होने पर, पुल्लिंग रूप में ही प्रयुक्त करना चाहिए।

11. **संकर शब्द** -- पारिभाषिक शब्दावली में संकर शब्द, जैसे Guaranteed के लिए 'गारंटित', classical के लिए 'क्लासिकी', codifier के लिए 'कोडकार' आदि, के रूप सामान्य और प्राकृतिक भाषाशास्त्रीय प्रक्रिया के अनुसार बनाए गए हैं और ऐसे शब्दरूपों

को पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकताओं यथा सुबोधता, उपयोगिता और संक्षिप्तता का ध्यान रखते हुए व्यवहार में लाना चाहिए।

12. **पारिभाषिक शब्दों में संधि और समास** -- कठिन संधियों का यथासंभव कम से कम प्रयोग करना चाहिए और संयुक्त शब्दों के लिए दो शब्दो के बीच हाइफन लगा देना चाहिए। इससे नई शब्द-रचनाओं को सरलता और शीघ्रता से समझने में सहायता मिलेगी। जहाँ तक संस्कृत पर आधारित 'आदिवृद्धि' का संबंध है, 'व्यावहारिक', 'लाक्षणिक' आदि प्रचलित संस्कृत तत्सम शब्दों में आदिवृद्धि का प्रयोग ही अपेक्षित है परंतु नवनिर्मित शब्दों में इससे बचा जा सकता है।

13. **हलंत** -- नए अपनाए हुए शब्दों में आवश्यकतानुसार हलंत का प्रयोग करके उन्हें सही रूप में लिखना चाहिए।

14. **पंचम वर्ण का प्रयोग** -- पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करना चाहिए परंतु lens, patent आदि शब्दों का लिप्यंतरण लेंस, पेटेंट या पेटेण्ट न करके लेन्स, पेटेन्ट ही करना चाहिए।[3]

7.4 नागरी लिपि तथा संक्षिप्तीकरण

7.4.1 नागरी लिपि तथा संक्षिप्तीकरण

आज इस भागदौड़ के युग में हर आदमी की यह आदत बनती जा रही है कि कम-से-कम समय में कम-से-कम शब्दो में अपने मन के भावों को अभिव्यक्त करें। इस स्वाभाविक प्रवृत्ति के फलस्वरूप ही संस्थाओं तथा संगठनों के लंबे-लंबे नाम संक्षिप्त होते जा रहे हैं और व्यक्तियों के नाम तो अधिकांशतः छोटे ही प्रचलित हो पाते हैं।

शब्द-निर्माण के जो अनेक सिद्धांत भारत सरकार के शब्दावली निर्माण के स्थायी आयोग ने निश्चित किए हैं, उनमें से एक 'संक्षिप्तीकरण' भी है। इसके अनुसार शब्द किसी संयुक्त शब्द अथवा वाक्यों के पदों को संक्षिप्त करके भी गढ़ा जा सकता है। इन संक्षिप्तियों के लिए अक्षर अथवा अलग-अलग वर्ण विशेषकर आदि वर्ण लिए जा सकते हैं, जैसा कि संक्षिप्त नामों में होता है। इन उदाहरणों में रडार, यूनेस्को आदि शब्द आते हैं। इस प्रक्रिया में हिंदी में शब्द बने हैं और बन रहे हैं। हिंदी में प्रचलित 'वदी' और 'सुदी' आदि शब्द इसी प्रक्रिया के फलस्वरूप हैं - 'सु' सुदिः, शु-शुक्लपक्ष तथा ब (बहुल)-कृष्णपक्ष। मुख्य समस्या के कई पहलू हैं। पहली बात यह है कि क्या संक्षिप्त रूप अँग्रेजी के संक्षिप्त रूप के आधार पर मात्र नागरीकरण हो अथवा हिंदी रूप के आधार पर। वैसे हिंदी में अंकटाड, सैम, मीडो, सीटो, इण्टक, नाटो, यूनेस्को आदि पर्याप्त शब्द प्रचलित हैं पर शब्दों, नामों तथा नाम-पदों के संक्षिप्त रूप कैसे बनाए जाएँ, इस संबंध में सिद्धांत स्पष्ट होना चाहिए, जैसे -

Joint Secretary जोइंट सेक्रेटरी - जे.एम.
Deputy Director डिप्टी डायरेक्टर - डी.डी.
अथवा संयुक्त सचिव - सं.स./संस
उप-निदेशक - उ.नि./उनि

प्रशासन में नाम पदों के संक्षिप्त रूपों का विशेष प्रचलन है। अभी बहुत से मंत्रालयों ने इस ओर ध्यान दिया है। पदनाम लोगों में प्रचलित संक्षिप्त रूप में ही प्रचलित होते हैं, ऐसी स्थिति में नागरीकरण मात्र ही अधिक उपयोगी सिद्ध होगा, क्योंकि उसके हिंदी रूप में नए फिर संक्षिप्त रूप तो और भी अधिक अस्पष्ट रहेंगे, जब तक सरलीकरण, उच्चारण आदि की दृष्टि से सहजता की ओर ध्यान न दिया जाए।

इस दिशा में रेलवे बोर्ड ने विशेष ध्यान दिया है -

हिंदी पदनाम	**नागरी संक्षिप्त रूप**	**रोमन लिपि में अँग्रेजी संक्षिप्त रूप**
मुख्य कार्मिक अधिकारी	मुकाधि	C.P.O.
मुख्य यांत्रिक इंजीनियर	मुयाइंजी	C.M.E.

संक्षिप्त रूप के जो सिद्धांत हैं, वे स्पष्ट रूप से इस प्रकार हैं -

1. प्रत्येक शब्द का पहला अक्षर (Syllable) अर्थात् स्वर। मात्रा युक्त व्यंजन वर्ण जैसे 'मुख्य' के स्थान पर 'मु' 'क्षेत्रीय' के स्थान पर 'क्षे'।

2. अंतिम शब्द जो प्राय: 'अधिकारी' है, उसका प्रथम अंश 'अधि'। ऐसी स्थिति में यदि पहला वर्ण मात्र व्यंजन है तो उसमें स्वर समाप्त हो जाता है, जैसे 'कार्मिक' के 'का' में आदि का 'अ' संधियुक्त है। जो भी संक्षिप्त रूप बने हैं, उनको कहाँ तक सरलता से बोला जा सकता है और कहाँ तक नहीं।

ये संक्षिप्त होते हुए भी लंबे तथा कठिन हैं और रोमन की तुलना में बोलने में पर्याप्त मुश्किल हैं। फलत: इस प्रकार केरूपों से हिंदी रूप बदनाम होते हैं और प्रकारांतर से 'नागरी' की बदनामी होती है और 'रोमन' का पक्ष प्रबल हो जाता है। यही बात है कि बोलने और लिखने की सुविधा न होने के कारण नागरी के संक्षिप्त रूप न बोले जाते हैं और न ही लिखे जाते हैं और रोमन के रूप ही बोलने-लिखने में चलते हैं।

रोमन में तो सामान्य नियम है कि प्रथम वर्ण/अक्षर को लेते हैं। स्वरों को जोड़ कर (Acronym) बनाने की भी प्रथा अब काफी प्रचलित हो गई है। क्या हिंदी में भी स्वरों की संधि की जाए। यदि हाँ, तो **संधि के नियम क्या होंगे ?** हिंदी में शब्दों, नामों, पदों के जो संक्षिप्त रूप बनाए जा रहे हैं, उनका कहाँ तक प्रचलन हो रहा है, इसका अध्ययन होना चाहिए।

यदि नागरी के संक्षिप्त रूपों को चलाना है, तो उन्हें यथसंभव संधि से मुक्त रखना होगा और रोमन की तुलना में अधिक नहीं, तो समान रूप से सरल भी।[4]

7.4.2 स्वतंत्र संक्षिप्ताक्षर (ACRONYM)

1) कई बार संक्षिप्ताक्षर संक्षिप्त होने के बाद स्वतंत्र रूप धारण कर लेते हैं और अपनी स्वतंत्र सत्ता कायम करते हुए प्रचलित हो जाते हैं। उनका यह रूप खटकता भी नहीं है और मूल शब्द के स्थान पर इन्हें ही मूल शब्द मान लिया जाता है। उदाहरण के लिए, **लीला** शब्द कंप्यूटर के माध्यम से हिंदी सीखने वालों के लिए हिंदी सॉफ्टवेयर है तथा इसके उपयोक्ताओं को अधिकांशतः इसका पूरा नाम मालूम नहीं होता है। यह अलग बात है कि सामान्य हिंदी में 'लीला' का भिन्न अर्थ भी उपलब्ध है।

2) कई बार मुख-सुख के लिए किसी भी नियम का पालन नहीं किया जाता है। उदाहरण के लिए बिट अर्थात् बाइनरी डिजिट (Binary Digit) को लिया जा सकता है। इसमें बाइनरी से बी और आई लिया गया है तथा डिजिट का अंतिम अक्षर टी लिया गया है। दूसरी ओर, फोरट्रान अर्थात् फॉर्मूला ट्रांसलेशन (Formula Translation) के संबंध में फार्मूला से फार तथा ट्रांसलेशन से ट्रान लिया गया है।

3) नियमों का व्यतिक्रम करते हुए एक्रोनिम बनाते समय कई बार शब्द को आकर्षक बनाने का उद्देश्य भी शामिल रहता है। उदाहरण के लिए लिस्प अर्थात् लिस्ट प्रोसेसिंग (List Processing) को लेते हैं। इसमें लिस्ट में से **लिस्** तथा प्रोसेसिंग में से केवल **प** लिया गया है।

4) एक्रोनिम को दूसरे शब्दों के साथ जोड़ने पर पुनः एक्रोनिम बन जाते हैं। ऐसा करते समय एक्रोनिम का केवल प्रथम अक्षर ही लिया जाता है। जैसे **इज्म** का पूरा शब्द-विस्तार है **इस्फोक स्क्रिप्ट मैनेजर**। इसमें 'इस्फोक' अपने आप में स्वयं ही एक्रोनिम है तथा इसका शब्द-विस्तार है इंडियन स्टैंडर्ड फॉर फॉंट कोडिंग (Indian Standard for Font Coding)।

7.5 उपलब्ध कंप्यूटर शब्दकोश/शब्दावली का तुलनात्मक अध्ययन

7.5.1 उपलब्ध कंप्यूटर शब्दकोश/शब्दावली का तुलनात्मक अध्ययन

कंप्यूटर के विकास तथा निरंतर बढ़ते उपयोग के कारण इसकी शब्दावली बनाने का कार्य भी अनेक स्तरों पर किया गया है।

(क) शासकीय स्तर पर : शासकीय स्तर पर **वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग** ने कंप्यूटर शब्दावली तैयार करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कंप्यूटर के विकास में भाषा की भूमिका अहं रही है। अतः आयोग ने भाषा-विज्ञान की शब्दावलियाँ तैयार करने की ओर भी पर्याप्त ध्यान दिया है। आयोग द्वारा तैयार तथा प्रकाशित कंप्यूटर तथा भाषा-विज्ञान संबंधी शब्दावलियाँ निम्नानुसार हैं :

(1) बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह,विज्ञान खंड 1 तथा 2
Comprehensive & Tecnicsl Glossaries : Science I & II (150/-)
(2) कंप्यूटर विज्ञान शब्दावली
Computer Science Glossary (57/-)
(3) कंप्यूटर विज्ञान की मूलभूत शब्दावली
Fundamental Glossary of Computer Science **(नि:शुल्क)**
(4) कंप्यूटर विज्ञान परिभाषा-कोश
Definitional Dictionary of Computer Science (102/-)
(5) गणित की मूलभूत शब्दावली
Fundamental Glossary of Mathematics (- /-)
(6) भाषा-विज्ञान परिभाषा-कोश (तीन खंडों में) (द्वितीय खंड
LinGuistics Definitional Dictionary (3 Parts) 59/-)
(7) अखिल भारतीय शब्दावली : भाषा-विज्ञान
A Glossary of Pan Indian Terms : Linguistics **(नि:शुल्क)**
(8) कंप्यूटर इंजीनियरी (वर्ष 2002 में कार्य प्रगति पर था।)
Computer Engineering

(ख) व्यक्तिगत स्तर पर : व्यक्तिगत स्तर पर अनेक व्यक्तियों ने इस दिशा में कार्य किया है। अधिकांशत: कंप्यूटर-लेखकों ने अपनी-अपनी पुस्तकों के माध्यम से कंप्यूटर-शब्दावली प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

i) राम बंसल "विज्ञाचार्य" :

इनमें से एक महत्वपूर्ण शब्दावली-सर्जक हैं - **राम बंसल "विज्ञाचार्य"**। इन्हें **कंप्यूटर शब्दकोश का डॉ. रघुवीर सहाय** कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इन्होंने वर्ष 1998 में अपने प्राथमिक तथा प्रथम प्रयास - **कंप्यूटर परिचालन तत्त्व** के **मंगलाचरण** में लिखा है कि - "हिंदी के भाषाविदों एवं ज्ञाताओं ने कंप्यूटरों को विजातीय वर्ग में रखा हुआ है। वे कंप्यूटरो को एक ऐसा अजूबा समझते हैं जिसके बारे मे वे जान नहीं पाएँगे। अत: वे इस दिशा में प्रयास ही नहीं करते। XXX अभी हिंदी में कंप्यूटरी शब्दावली विकसित नहीं हुई है, इसलिए मैंने कुछ नए शब्दों को स्थापित करने का प्रयास किया है। इसके लिए मैंने **अँग्रेजी शब्दों का शब्दानुवाद न कर के भावानुवाद किया है।** जहाँ कहीं संशोधन की आवश्यकता होगी, मैं **खुले मस्तिष्क से** उन्हें स्वीकार करूँगा।

इन सब प्रयासों का मूल उद्देश्य यह है कि निकट भविष्य में हिंदी में कंप्यूटरी भाषाओं तथा मूलभूत प्रक्रमों का विकास हो, जिससे कंप्यूटरों के ऊपर लगी 'विदेशी तत्व' की मुहर धूमिल हो कर उस पर एक नई मुहर उभरे - 'मानवीय तत्त्व' की। हिंदी भाषियों को कंप्यूटर पूर्णत: हिंदी भाषी ही लगे, सभी कार्य हिंदी में भी संभव हों।"[5]

विज्ञाचार्य ने हिंदी में कंप्यूटर शब्दावली के विकास तथा उन्नयन हेतु सतत प्रयास किया है। इस विकास तथा उन्नयन की क्रमिक झलक उनकी पुस्तकों में दिखाई देती है।

उदाहरण के लिए 'कंप्यूटर' शब्द को लिया जा सकता है। पहली पुस्तक की पारिभाषिक शब्दावली में यह शब्द परिभाषित करते हुए मात्र लिप्यंतरण किया गया है। लेकिन नवीं पुस्तक तक पहुँचते-पहुँचते कंप्यूटर की पाँचवीं पीढ़ी की तरह यह शब्द कंप्यूटर > संपादयित्र तक का विकास तथा उन्नयन की अवस्था को प्राप्त कर चुका है, क्योंकि कंप्यूटर अब केवल संगणन का कार्य ही नहीं करता बल्कि सभी कार्य संपादित करता है। इस प्रकार उन्होंने अपने आदर्शों को यथार्थ के धरातल पर उतारने का मूर्त प्रयास किया है।

शब्दावली विकास करने की शुरुआत विज्ञाचार्य ने अपनी पहली पुस्तक से ही की थी। उस समय इसका स्वरूप पारिभाषिक शब्दावली का था। धीरे-धीरे वे अँग्रेजी-हिंदी शब्दावली, हिंदी-अँग्रेजी शब्दावली, कंप्यूटरी संक्षेप-कोष का विकास भी करते गए।

"विज्ञाचार्य " वर्ष 2001 में अपनी नवीं पुस्तक **कंप्यूटर : क्या, क्यों और कैसे** के प्राक्कथन में कहते हैं कि - "मैंने कंप्यूटर संबंधी हिंदी शब्दावली का क्रमित विकास किया है। इस कारण से आरंभिक पुस्तकों में उपयुक्त की गई शब्दावली तथा इस पुस्तक की शब्दावली में प्रचुर अंतर हो गया है। इस पुस्तक तक आते-आते संपूर्ण कंप्यूटर शब्दावली का अभीष्ट विकास हो गया है जिनकी **संकलित प्रस्तुति आगे एक शब्दकोश के रूप में** करने की प्रबल अभिलाषा है। XXX

मैं इस संबंध में गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर को अपना आदर्श मानते हुए हिंदी शब्दावली विकास पर बल देता रहा हूँ। श्री ठाकुर ने बाँगला भाषा का सतत लेखन करते हुए उस भाषा को 40,000 नूतन शब्दों का योगदान प्रदान किया था जिनके बल पर आज बाँगला भाषा एवं साहित्य भारत में सर्वश्रेष्ठ स्तर पर हैं। बाँगला भाषा में अभिव्यंजना हेतु किसी विदेशी भाषा के आश्रय की आवश्यकता नहीं होती, जबकि हिंदी के अधुना प्रकांड पंडित भी विदेशी बर्बर लुटेरों एवं आधिपत्यकों की भाषाओं के आश्रय में अपना पांडित्य सिद्ध करने में व्यस्त हैं।(पृष्ठ v) "[6]

इतने उदात्त विचारों के पोषक होने के बावजूद विज्ञाचार्य के इस निर्णय का कारण समझना मुश्किल है कि उन्होंने कंप्यूटर शब्दावली का विकास करने के साथ-साथ यह पाबंदी क्यों लगा दी है कि **उनके द्वारा लिखी गई कंप्यूटर विषयक पुस्तकों के किसी भी भाग के किसी भी माध्यम से संग्रह तथा पुनर्प्रस्तुति हेतु लेखक की लिखित अनुमति आवश्यक है।** इन शब्दों की राशनिंग करने पर लोग विशेषकर हिंदी से विमुख लोग, इन शब्दों को अपनाने से कतराएँगे। जब विज्ञाचार्य द्वारा निर्मित शब्द का प्रयोग कोई नहीं करेगा तो ये शब्द भी पुस्तकों में बंद ही पड़े रह जाएँगे और अप्रचलित बने रहेंगे तथा विज्ञाचार्य का आदर्शोन्मुख उद्देश्य धरा का धरा ही रह जाएगा। **कंप्यूटर परिचालन तत्त्व** के **मंगलाचरण** में उन्होंने कहा है कि "समस्त मानव जाति का इस आविष्कार पर समान अधिकार है, सभी इससे लाभान्वित हो सकते हैं तथा सभी को इसके और विकास में भागीदार होना है। XXX आशा है, ये नए शब्द सभी को पसंद आएँगे तथा भविष्य में इन्हीं का प्रचलन हो जाएगा।"[7]

ii) बादल कुमार शर्मा :

कंप्यूटर शब्दों की संकलित प्रस्तुति शब्दकोश के रूप में **बादल कुमार शर्मा** ने साकार कर दिया है। उन्होंने **गोल्ड कंप्यूटर शब्दकोश** तैयार की है जो गोल्ड बुक्स (इंडिया), 4537, दाईवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली - 6 (ई-मेल : gold_pub@lycos.com) से प्रकाशित हुई है। इसका मूल्य रू. 80/- है।

iii) अन्य कंप्यूटर-लेखक तथा परिपाटी का निर्वाह :

अन्य कंप्यूटर लेखकों ने स्वतंत्र रूप से कंप्यूटर संबंधी पुस्तकों में ही कंप्यूटर शब्दावली को स्थान दिया है। कंप्यूटर की पुस्तकों में संलग्न की जाने वाली शब्दावली **तत्काल-संदर्भ** (Ready reference) की दृष्टि से महत्वपूर्ण होती है। अब तो **कंप्यूटर संबंधी पुस्तकों में कंप्यूटर शब्दावली दिया जाना परंपरा का रूप ले चुका है** तथा कंप्यूटर की किसी भी स्तरीय पुस्तक में कंप्यूटर शब्दावली उसके अभिन्न भाग के रूप में विद्यमान रहती है।

7.5.2 शब्दावली में सिमटती राजभाषा हिंदी

कोई भी भाषा अपना स्वरूप तभी तक बरकरार रख सकती है जब तक उसमें संप्रेषण की क्षमता विद्यमान हो। संप्रेषणीयता ही भाषा को जीवंत बनाती है। इसके लिए आवश्यक है कि भाषा में शब्दों का विपुल भंडार मौजूद हो।

हिंदी की संप्रेषण क्षमता ने उसे इतना लोकप्रिय बनाया कि वह लोकभाषा के रूप में विकसित हुई। यद्यपि हिंदी का प्रारंभिक काल अनेक घात-प्रतिघातों से ग्रस्त रहा है, फिर भी हिंदी निरंतर विकासशील रही। तत्कालीन प्रतिष्ठित भाषा संस्कृत के समक्ष हिंदी को हेय दृष्टि से देखा जाता था। लेकिन जनमानस ने हिंदी को ही अपनाया क्योंकि उस दौर में हिंदी ही लोगों के भावों तथा विचारों को सरलतापूर्वक संप्रेषित करती थी।

हिंदी की लोकप्रियता तथा संप्रेषणीयता को देखते हुए ही भारत ने इसे राजभाषा के रूप में अंगीकार किया। राजभाषा बनते ही हिंदी का दायरा काफी अधिक बढ़ गया तथा उसी अनुपात में हिंदी को अपनी संप्रेषणीयता बढ़ाना आवश्यक हो गया। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए यह आवश्यक हो गया कि हिंदी के शब्द-संपदा में अभिवृद्धि की जाए।

राजकाज सुचारु ढंग से करने के लिए प्रशासनिक तथा विधि संबंधी शब्दों की आवश्यकता तत्काल महसूस की गई थी। साथ ही, विज्ञान युग में प्रवेश के लिए विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों के शब्दों की जरूरत थी। इसके अलावा राजभाषा के रूप में हिंदी को अपना अखिल भारतीय स्वरूप विकसित करने के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी अभिव्यक्ति के योग्य बनना था।

राजभाषा हिंदी की आवश्यकतानुसार संविधान में प्रावधान किए गए तथा उन प्रावधानों के अनुपालन में समय-समय पर यथोचित कार्रवाई की गई। संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 344(3) के अनुसार राष्ट्रपति के आदेश के तहत गठित आयोग भारत की

औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का और लोक सेवाओं के संबंध में अहिंदीभाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्यायसंगत दावों और हितों का सम्यक ध्यान रखेगा। अप्रैल, 1960 के राष्ट्रपति द्वारा विज्ञान और तकनीकी शब्दावली तैयार करने के लिए स्थायी आयोग गठित करने के लिए आदेश जारी किया गया। इस आदेश के अनुपालन में तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत 1961 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की गई। 1988 में संसदीय राजभाषा समिति के प्रतिवेदन के प्रथम खंड पर जारी संकल्प मद क्रमांक 22 में विभिन्न वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों की शब्दावली तथा परिभाषाकोश का निर्माण आवश्यकतानुसार करने का उल्लेख है।

विज्ञान एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने 1965 में सर्वप्रथम प्रशासन संबंधी पारिभाषिक शब्दावली प्रकाशित की थी। आयोग ने अब तक विज्ञान, मानविकी, सामाजिक विज्ञान, कृषि, आयुर्विज्ञान, अभियांत्रिकी, प्रबंधन तथा प्रशासन आदि क्षेत्रों में लगभग पाँच लाख तकनीकी शब्दों का विकास किया है। इसी प्रकार राजभाषा (विधायी) आयोग ने 1970 में विधि शब्दावली का प्रकाशन किया था जिसमें लगभग दस हजार शब्द और पद, आदि थे। 1976 में प्रामाणिक विधि शब्दावली तैयार करने और प्रकाशित करने का दायित्व विधि मंत्रालय के विधायी विभाग के राजभाषा खंड को सौंप दिया गया, जिसने विधि शब्दावली की अभिवृद्धि में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

शब्दावली निर्माण के इन कार्यों से राजभाषा हिंदी के शब्द भंडार को समृद्ध करने में अत्यंत सहायता मिली है। इसके चलते हिंदी विश्व की किसी भी समृद्ध भाषा के समकक्ष हो गई है तथा इसमें किसी भी प्रकार की अभिव्यक्ति करना संभव हो गया है। लेकिन इन शब्दों का प्रयोग करते हुए हिंदी में स्वयं को अभिव्यक्त करने के प्रति हिचकिचाहट अभी भी बरकरार है। इस कारण ये सभी शब्द प्रयोग की भट्टी में तप कर हमारे व्यक्तित्व का अंग नहीं बन पाए हैं।

वस्तुतः किसी भी भाषा के शब्दों का सृजन आवश्यकतानुसार उसे बोलने वाले लोगों द्वारा ही किया जाता है, जो धीरे-धीरे भाषा का अंग बन कर स्थायित्व प्राप्त करता हुआ शब्दावली में स्थान प्राप्त करता है। लेकिन हिंदी के राजभाषा बनने पर जिस प्रकार हिंदी में जितने अतिरिक्त शब्दो की आवश्यकता तत्काल उत्पन्न हुई, उसे देखते हुए लोगों द्वारा उतने शब्दों का निर्माण तत्काल किए जाने की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी। अतः शब्दालय में शब्दों का निर्माण कर के लोगों को उपलब्ध कराया गया। इस उल्टी प्रक्रिया का ही परिणाम है कि जनमानस इन शब्दों को आत्मसात नहीं कर पाया है।

राम बंसल "विज्ञाचार्य" ने अपनी पुस्तक **"कंप्यूटर सामान्य ज्ञान एवं यूजर गाइड"** के **प्राक्कथन** में कहा है - ""भारत सरकार का वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग विगत 30 वर्षों से गाड़ी को धक्का दे कर बैलों को चलाने का प्रयास कर रहा है। वह चाहता है कि तकनीकी शब्दावली पहले विकसित हो तब उसके उपयोग से लेखन हो। संभवतः वहाँ के तथाकथित विशेषज्ञ नहीं जानते कि शब्द भाषा के उपयोग से उत्पन्न होता है न कि भाषा

शब्द से। पहले हिंदी में लेखन होना चाहिए, शब्दावली स्वयमेव उग आएगी। जिन्होंने कभी कुछ नहीं लिखा, वे कभी भी व्यावहारिक शब्दों का निर्माण नहीं कर सकते। आयोग एवं उसके समर्थक हिंदी भाषा को राजकीय दासों की दासी का स्वरूप प्रदान करने का प्रयास कर रहे हैं.इसका घोर विरोध होना चाहिए।"[8]

अटल बिहारी वाजपेयी का यह आह्वान गौरतलब है कि अभी तक हम **"लैब टू लैंड"** के सिद्धात पर कार्य कर रहे थे, लेकिन अब समय आ गया है कि जब **"लैंड टू लैब"** की प्रक्रिया शुरु करनी होगी। लेकिन अब लोगों को आदत्त पड़ गई है कि उन्हें हिंदी मे बने-बनाए रेडीमेड शब्द मुहैया करा दिए जाएँगे। अत: वे हिंदी के बजाय दूसरी भाषा को समृद्ध करने में व्यस्त हैं और उस भाषा के लिए उनके द्वारा नवगठित शब्दों के हिंदी पर्याय की अपेक्षा पूर्ववत करते हैं।

यद्यपि कुछ शब्द प्रचलन में अवश्य आ गए हैं, फिर भी अनेक शब्द "क्लिष्टता" के आरोप के शिकार हो गए हैं। लेकिन इस क्लिष्टता को दूर करने का कोई विकल्प किसी ने प्रस्तुत नहीं किया है। क्लिष्टता की दुहाई दे कर इन शब्दों का प्रयोग वर्जित कर दिया गया है जिससे प्रयोग की घिसाई से इन्हें सुघड़ बनाना संभव नहीं हो सका है। ये शब्द प्रयोग में आने पर धीरे-धीरे अपना विकास करते हुए भाषा में रच-बस कर उसका अभिन्न अंग बन सकते हैं।

लोगों द्वारा वर्जित इन शब्दों का प्रयोग अनुवाद के रूप में किया जा रहा है। लिखित रूप में प्रयुक्त इन शब्दों को समझने के लिए पुन: शब्दावली का सहारा लिया जाता है। इस प्रकार इन शब्दों की यात्रा जहाँ से शुरु करने का उपक्रम किया जाता है, वहीं उस यात्रा का समापन भी हो जाता है।

7.5.3 भविष्य की संभावनाएँ

(1) **कंप्यूटर एनसाइक्लोपीडिया** : अँग्रेजी मे कंप्यूटर एनसाइक्लोपीडिया तैयार किया जा चुका है। लेकिन हिंदी में इतने महत्व के कार्य के बारे में अभी तक किसी ने सोचा भी नहीं है। अँग्रेजी मे **प्रशांत गुप्ता** के संपादन मे **ड्रीमलैंड का इलस्ट्रेटेड कंप्यूटर एनसाइक्लोपीडिया** का प्रकाशन वर्ष में हो चुका है। इसका मूल्य रू.450/- है। इसे **अनूदित कर के हिंदी में उपलब्ध** कराया जा सकता है। मूल नहीं तो अनुवाद ही सही। इसके प्रकाशक का पता है : ड्रीमलैंड्स पब्लीकेशंस, जे-128, कीर्तिनगर, नई दिल्ली-110015 (ई-मेल : dreamland@vsnl.com)।

(2) **नैनो-मिनी लिलीपुट शब्दकोश** : कंप्यूटर एनसाइक्लोपीडिया की बात अभी छोड भी दी जाए, तो भी लघु आकार के नैनो-मिनी (नन्हे-मुन्ने) लिलीपुट-शब्दकोश के अब तक प्रकाशित न होने का कोई कारण स्पष्ट नहीं होता है। कंप्यूटर की पुस्तकों में **संलग्न की जाने वाली शब्दावली को ही पृथक रूप से प्रकाशित** किया जाए तो इस कमी को पूरा किया जा

सकता है। अपने छोटे आकार के कारण इसे सदैव अपने पास रखा जा सकता है, जिससे कम्प्यूटर के हिंदी शब्दों के प्रयोग को बढ़ाने में अत्यंत सहायक प्राप्त हो सकती है।

(3) **भाषा-विज्ञान की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला शब्दकोश** : हिंदी में कंप्यूटर संबंधी शब्दों का विकास शब्दावलियों के रूप में ही हुआ है अर्थात शब्दो की आवलि। ऐसा करने के तहत यही उद्देश्य रहा है कि हिंदी में विद्यमान शून्य को भरा जा सके। लेकिन शब्दकोश में संदर्भ की दृष्टि से अन्य विवरण नदारद ही होते हैं। उदाहरण के लिए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (वैतशआ) ने शब्द-निर्माण के सिद्धांत तो बनाए हैं, लेकिन शब्दों के सामने यह स्पष्ट नहीं किया है कि उस शब्द की व्युत्पत्ति किस प्रकार की गई है। शब्द का निर्माण संस्कृत धातुओं से किया गया है या प्रादेशिक भाषा से ? यदि प्रादेशिक भाषा से किया गया है तो किस प्रादेशिक भाषा से? संकर-शब्द किस-किस से मिल कर बना है ? उपसर्ग, प्रत्यय का प्रयोग किस प्रकार किया गया है। नवनिर्मित शब्द संज्ञा है या विशेषण, आदि का स्पष्टीकरण भी इन शब्दकोशो में नहीं मिलता है। इस प्रकार भाषा-विज्ञान की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला विस्तृत जानकारी से परिपूर्ण कंप्यूटर-शब्दकोश अभी भविष्य के गर्भ में ही है।

(4) **हिंदी कंप्यूटर संबंधी शब्दों का संकलन** : कंप्यूटर शब्दावली में अभी तक हिंदी कंप्यूटर के शब्दों को स्थान नहीं मिला है। संभवत: यह मान लिया गया है कि हिंदी-में कंप्यूटर का अस्तित्व ही नहीं है। इसलिए इस दिशा में सोचने की भी आवश्यकता किसी ने अनुभव नहीं की। इस पुस्तक में इस कमी को दूर करने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए भारतीय भाषाओं के लिए कार्यरत **सी-डेक** और हिंदी अनुवादक **मंत्र**, हिंदी सॉफ्टवेयर **लीला, लिप्स** जैसे संक्षिप्ताक्षरों को शब्द-विस्तार के साथ प्रस्तुत किया गया है, तो दूसरी तरफ हिंदी सॉफ्टवेयर जैसे जिस्ट, लीप ऑफिस, इज्म, आकृति को भी शब्दावली मे स्थान दिया गया है।

(5) **वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के कार्य-क्षेत्र में विस्तार** : वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने हिंदी कंप्यूटर के क्षेत्र में हो रहे कार्यों से **समृद्ध होती हिंदी शब्दावली** की ओर ध्यान नहीं दिया है। आयोग द्वारा अपने भावी कार्य-क्षेत्र में इसे भी शामिल किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए सी-डेक तथा अनेक निजी कंपनियाँ हिंदी कंप्यूटर के क्षेत्र में विगत अनेक वर्षों से कार्यरत हैं। आयोग की शब्दावली में 'आस्की' की चर्चा मिल जाएगी, मगर 'इस्की' ढूँढे से भी नहीं मिलेगा।

(6) **कंप्यूटर पर पत्रिका का प्रकाशन** : कंप्यूटर-युग में कंप्यूटर के दिन-प्रतिदिन विकास की अद्यतन जानकारी के साथ अनेक अंग्रेजी पत्रिकाएँ बाजार में उपलब्ध हैं और ज्यादा मूल्य होने के बावजूद बिक रही हैं। ये पत्रिकाएँ साथ मे सीडी भी देती हैं। लेकिन हिंदी मे कंप्यूटर पत्रिकाएँ कुकुरमुत्ते की तरह कुछ अंकों के साथ प्रायोगिक स्तर पर दिखाई देती हैं और फिर बंद हो जाती हैं, भले ही इनकी कीमत अंग्रेजी पत्रिकाओं की तुलना में आधी ही क्यों न हो। **चिपहिंदी** जैसी पत्रिकाओं ने बहुत ही कम समय में अपना दम तोड़ दिया था। जन्म-दर की तुलना में इन पत्रिकाओं की मृत्यु-दर अधिक है।

मई,2001 में शुरु होने वाली मासिक पत्रिका **स्मार्ट कंप्यूटिंग** ने कुछ अंकों के बाद ही खुद को **स्मार्ट कंप्यूटिंग सीरीज** के रूप में ढाल लिया। समय के साथ चलते हुए अब इस पत्रिका ने सीडी भी उपलब्ध कराना शुरु कर दिया है। इस कारण इसकी कीमत अधिक हो जाती है।

इस समय केवल **कंप्यूटर संचार सूचना** (नई दिल्ली) ही एकमात्र ऐसी कंप्यूटर-पत्रिका है जो पिछले सात वर्षों से नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है। इस पत्रिका के संपादक **हरिशंकर व्यास** ने जून,2003 के अंक में अपने **संपादकीय** में लिखा है कि "पत्रिका का पहला लक्ष्य वे नौजवान छात्र या हिंदीभाषी हैं, जिन्होंने कंप्यूटर का नाम सिर्फ सुना है, जिनके दिलो-दिमाग में कंप्यूटर और आईटी को ले कर कौतुक है। इन लोगों को अपनी भाषा में सहज-सरल शैली में आईटी का बेसिक बताना और समझाना मूल लक्ष्य है। घर-परिवार के लिए पत्रिका उपयोगी हो, खरीद और कैरियर में उनके लिए सलाहकार का काम करे, यह हमारी चिंता है। इसलिए कंप्यूटर, विंडोज, कोरल ड्रा, मदरबोर्ड आदि जुमले पुराने लग सकते हैं, पर आम हिंदीभाषी के लिए ये रहस्य या कौतुक के शब्द हैं। उनकी **अगर हम चिंता नहीं करेंगे तो अपनी भाषा में आईटी के प्रति जागरूकता और समझ कैसे बनेगी।**"[9]

हिंदी माह सितंबर 2003 से डिजीटल लाइफ के रूप में राष्ट्रभाषा की धड़कन बन धड़कने के लिए कंप्यूटर पत्रिका **कंप्यूटर विकास** का प्रकाशन वाराणसी से आरंभ हुआ है। प्रथम वर्ष के प्रथम अंक में **वेद प्रकाश पांडेय** ने अपने **संपादकीय** में लिखा है कि - "एक अच्छा प्रयोगकर्ता बनने के लिए यह आवश्यक है कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति कंप्यूटर का विस्तृत अध्ययन करे और देश को एक समृद्धशाली राष्ट्र बनाने में मदद करे।"[10]

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, डिपार्टमेंट ऑफ इलैक्ट्रॉनिक्स, सी-डेक, जैसी सरकारी संस्थाएँ किफायती दामों पर कंप्यूटर पर हिंदी पत्रिका का प्रकाशन नियमित रूप से कर सकती हैं।

7.6 कंप्यूटर शब्दावली

1. अभी हिंदी में कंप्यूटर के शब्दों के संबंध में एकरूपता नहीं है। अतः अँग्रेजी वर्णमाला के अनुसार शब्दावली तैयार कर के यहाँ आगे प्रस्तुत की गई है।

2. इस पुस्तक में जिन पुस्तकों के उद्धरण दिए गए हैं, उनमें कंप्यूटर संबंधी अँग्रेजी शब्दों को लिप्यंतरण करते हुए, तथा अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार उनका हिंदी पर्याय देने का प्रयास किया गया है। सभी का आधार अँग्रेजी शब्द ही हैं। अतः अँग्रेजी वर्णमाला के अनुसार शब्दावली को तैयार करते हुए उपलब्ध सभी-संभव-पर्याय प्रस्तुत किए गए हैं।

3. चूंकि अँग्रेजी के शब्दों को हिंदी में ज्यों का त्यों ग्रहण/आत्मसात किया जा रहा है, अतः उन शब्दो की सही वर्तनी पर ध्यान देना आवश्यक है।

4. इस कंप्यूटर शब्दावली को

(क) अँग्रेजी वर्णमाला के अनुसार तैयार किया गया है।

(ख) अँग्रेजी शब्द का लिप्यंतरण किया गया है।

(ग) हिंदी पर्याय दिया गया है।

(घ) यथाआवश्यकता शब्द को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

(ङ) किसी ने कोई विशेष अर्थ सुझाया है, तो ब्रैकेट में उनका नाम देते हुए उस अर्थ को दिया गया है।

(च) कंप्यूटर के क्षेत्र में प्रचलित संक्षिप्ताक्षरों (Acronyms) को उनके अर्थ-विस्तार के साथ प्रस्तुत किया गया है।

(छ) अँग्रेजी के लंबे-लंबे शब्द तथा पद-समूह को लिप्यंतरित करते समय आवश्यकता के अनुसार हाइफन का प्रयोग किया गया है, जिससे हिंदी की प्रकृति के अनुकूल छोटे-छोटे शब्द सामने आ सकें।

7.6.1 संक्षिप्ताक्षर तथा शब्द विस्तार
ABBREVIATION / ACRONYM & ITS EXPANSION
[हिंदी अभिकलित्र (कंप्यूटर) के विकास से विकसित शब्दावली सहित]

ACII (आकी) - Alphabetical Code for Information Interchange
ADC(एडीसी) - Analog to Digital Converter
ALGOL(अल्गोल) - Algorithmatic Language
AMC (एएमसी) - Association for Computing Machinery
ANDS(एंड्स) - Alpha-Numeric Data Store
ANSI(आनसी) - American National Standard Institute
ASCII(आस्की) - Americal Standard Code for Information Interchange
AT(एट) - Advanced Technology
ATN(एटीएन) - Augmented Transition Network
AT&T(एटीएंडटी) - American Telephone & Telegraph Company
BASIC(बेसिक) - Beginner's All-Purpose Symbolic Instruction Code
BCD (बीसीडी) - Binary Coded Decimal
BIOS(बायोस) - Basic Input Output System
BIS(बिस) - Bureau of Indian Standard
BIT(बिट) - Binary Digit
BSNL(बीएसएनएल)- Bharat Sanchar Nigam Limited
BYTE(बाइट) - Binary Term, अर्थात 8 bits
C-DAC(सी-डेक) - Centre for Development of Advanced Computing
CL(सीएल) - Computing Language
COBOL(कोबोल) - Common Business Oriented Language
COMAL(कोमाल) - Common Algorithmic Language
CPU(सीपीयू) - Central Processing Unit
CRD(सीआरडी) - Commercial Relational Database
Dbase(डीबेस) - Data Base
DBMS(डीबीएमएस)- Database Management System
DNS(डीएनएस) - Domain Name System
DOS(डॉस) - Disk Operating System
DTP(डीटीपी) - Desk Top Publishing
EBCDIC(ईबीसी डिक)-Extended Binary Coded Decimal Interchange Code
EDP(ईडीपी) - Electronic Data Processing
ESI(ईएसआई) - Essential Science Indicators
FK (एफ के) - Function Keys
FORTRAN(फोरट्रॉन)-Formula Translation
FTP(एफ टी पी) - File Transfer Protocol

GIGO(गीगो) - Garbage In Garbage Out
GIS(जिस्ट) - Graphics & Indian Script Terminal
GNU(जीएनयू) - General Public Licence
GUI(गुई) - Graphical User Inteface
HTML(एचटीएमएल)- Hyper Text Markup Language
IAL(आईएएल) - International Algorithmic Language
INSCRIPT(इनस्क्रिप्ट)- Indian Script
INTERNET(इंटरनेट)- International Network
IP(आई पी) - Internet Protocol
ISCII(इस्की) - Indian Script for Standard Code for Information Interchange
ISDN(आईएसडीएन)- Integrated Services Digital Network
ISFA(इस्फा) - Intelligence based Script to Font Algorithm
ISFOC (इस्फोक) - (1) Indian Standard for Font Coding
(2) Intelligence based Script Font Code
ISM(इज्म) - ISFOC Script Manager
ISO(आईएसओ) - International Standard Organization
KIPS(किप्स) - Knowledge Information Processing System
LAN(लैन) - Local Area Network
LASER(लेसर) - Light Amplification by Stimulated Emission of Radiation
LED(लेड) - Light-Emitting Diode
LILA (लीला) - Learning Indian Languages through Artificial Intelligence
LIPS (लिप्स) - Language Independent Programme Subtitling
LISP(लिस्प) - List Processing
MAIT(मैट) - Manufacturers Association of Information Technology
MANTRA(मंत्र) - Machine assisted Translation
MODEM (मोडेम) - Modular Demodular
MTNL(एमटीएनएल)- Mahanagar Telephone Nigam Limited
NASSCOM(नैस्कॉम)-National Association of Software & Service Companies
NFS(एनएफएस) - Network File System
NIS(एनआईएस) - Network Information Services
OOPS(ऊप्स) - Object Oriented Programme System
OSS(ओएसएस) - Open Source Software
PC(पी सी) - Personal Computer
PILOT(पायलट) - Programmed Inquiry, Learning or Teaching
PIXEL(पिक्सल) - Picture Element

PL(पीएल) - Programming Language
PROLOG(प्रोलोग) - Programming in Logic
PSTN(पीएसटीएन) - Public Switched Telephone Netwok
RDBMS(आर डी बी एम एस)- Relational Database Management System
RAM(रैम) - Random Access Memory
ROM(रोम) - Read Only Memory
RSI(आरएसआई) - Repetitive Stress Injury
SCD(एससीडी) - Self Contained DisK
SMB(एसएमबी) - Session Message Block
SNOBOL(स्नोबोल)- String Oriented Symbolic Language
SQL(एसक्यूएल) - Structured Querry Language
SRT(एसआरटी) - Source Routing Transparent
TAG(टैग) - Tree Adjoining Grammer
TCL(टीसीएल) - Tool Command Language
TCP(टीसीपी) - Transmission Control Protocol
TK(टी के) - Tool Kit
VDU(वीडीयू) - Visual Display Unit
VMS(वीएमएस) - Virtual Memory System
VSNL(वीएसएनएल)- Videsh Sanchar Nigam Limited
WAN(वैन) - Wide Area Network
WWW(डब्लयू डब्लयू डब्लयू)- World Wide Web
XT(एक्स टी) - External Technology

7.6.2 अँग्रेजी से हिंदी अभिकलित्र-शब्दावली

[हिंदी अभिकलित्र (कंप्यूटर) के विकास से विकसित शब्दावली सहित]

Aakruti Office	= आकृति ऑफिस, इंटरफेस
Aalekh	= आलेख, बहुभाषी शब्द संसाधन पैकेज
Access	= एक्सेस, पहुँच, अभिगम (वै.त.श.आ.)
Action	= एक्शन, क्रिया (वै.त.श.आ.)
ADA	= एडा, रक्षा परियोजनाओं की प्रोग्रामिंग भाषा, सर्वप्रथम प्रोग्रामर लेडी एडा लवलेस के सम्मान में नामकरण
Address Book	= एड्रेस बुक, पता बुक
Adapter	= एडाप्टर, अनुकूलक (विज्ञाचार्य)
Age-analysis	= एज-एनालिसिस, तारीखवार स्टॉक विश्लेषण
Akshar	= अक्षर, बहुभाषी शब्द संसाधन पैकेज
Akshar for windows	= अक्षर फॉर विंडोज, इंटरफेस
Algorithm	= एल्गोरिथ्म, एल्गोरिद्म, कलनविधि (वै.त.श.आ.)
Algorition	= अलॉगरिशन, लघुगणक
Alien	= एलाइन, मेकरो वाइरस
Alignment	= एलाइनमेंट, संरेखण (वै.त.श.आ.)
ALP	= एल्प, हिंदी फ़ोंट वाले सॉफ्टवेयर
Alt	= एल्ट, आल्ट
Analog	= एनालॉग, अनुरूप (वै.त.श.आ.)
Ankur	= अकुर, बहुभाषी सॉफ्टवेयर
Ankur Rupa	= अंकुर रूपा, कंप्यूटर सुविधा
Anti-virus	= एंटी-वाइरस, विषाणु विरोधी, वाइरस प्रतिरोधी, वाइरस-रोधी
Aplet	= एप्लेट
Application	= एप्लीकेशन, अनुप्रयोग (वै.त.श.आ.), उपादयी/उपादयन (विज्ञाचार्य)
Approach	= एप्रोच, उपागम (वि.मल्होत्रा)
APS Corporate	= एप्स कॉरपोरेट
Array	= एरे, सरणी (वै.त.श.आ.), व्यूह (विज्ञाचार्य)
Artificial intelligence	= आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस, कृत्रिम बुद्धि (वैतशआ), कृत्रिम बोधगम्यता, कृत्रिम अनुबोध /बुद्धिवृत्ति (विज्ञाचार्य)
Ashar	= अशर, एक वाइरस
Assembler	= एसेंबलर, संयोजक, कोडातरक (वै.त.श.आ.), अभियोजक (विज्ञाचार्य)
Assembly Language	= असेंबली लैंग्वेज, असेंबली भाषा, सांकेतिक भाषा, संयोजन भाषा, कोडातरण भाषा (वै.त.श.आ.)
Assembly Line	= एसेंबली लाइन, समुच्चय लाइन, कोडांतरण (वै.त.श.आ.)
Asterisk	= एस्ट्रिक्स, हिंदी सॉफ्टवेयर पैकेज
AT Mode	= ए.टी.मोड, एडवांस्ड टेक्नोलॉजी मोड, प्रगत प्रौद्योगिकी मोड, कुंजीपटल के काम करने का मोड
Attribute (ATR)	= एट्रीब्यूट, लक्षण विशेष, गुण (वै.त.श.आ.)
Audible Data	= ऑडिबल डेटा, श्रव्य या ध्वनिमूलक डेटा/डाटा
Augmented	= अगमेंटेड, आवर्धित

Automatic Prototyping = ऑटोमैटिक प्रोटोटाइपिंग, स्वतः/स्वचालित प्रोटोटाइपिंग
Auto save = ऑटो सेव
Back Space = बैक-स्पेस, पश्च रिक्ति, पश्चीयन (वै.त.श.आ.)
Backup = बैकअप, पूर्तिकर (वै.त.श.आ.)
Bank-Mitra = बैकमित्र, भारतीय भाषाओ का सॉफ्टवेयर.
Base = बेस, आधार (वै.त.श.आ.)
BASICA = बेसिका, प्रोग्रामिंग भाषा
Bharati = भारती, बहुभाषी शब्द संसाधक पैकेज
Bilingual = बाइ-लिंगुअल, द्विभाषी
Binary = बाइनरी, द्विआधारी (वै.त.श.आ.),
द्विक, द्विअकीय, द्विअंकी (विज्ञाचार्य)
Binary Addition = बाइनरी एडीशन, बाइनरी जोड़, बाइनरी योग
Binary Arithmetic = बाइनरी अर्थमैटिक, बाइनरी अंकगणित, द्विआधारी अंकगणित
Binary Data = बाइनरी डाटा, बाइनरी डेटा, बाइनरी ऑकड़ा
Binary Digit = बाइनरी डिजिट, बाइनरी अंक, द्विआधारी अंक (वै.त.श.आ.)
Binary Multiplication = बाइनरी मल्टीप्लीकेशन, बाइनरी गुणन
Binary Substraction = बाइनरी सबस्ट्रेक्शन, बाइनरी घटाव
Biological Virus = बायोलॉजिकल वाइरस, जैविक वाइरस
Biometrix System = बायोमैट्रिक्स सिस्टम, विशिष्टताओं के साथ बोले गए विशिष्ट शब्दों से पहचान करने वाला सिस्टम
Bi-script = बाइ-स्क्रिप्ट, बहुभाषी शब्द संसाधक पैकेज
Bit = बिट, द्वयंक (वै.त.श.आ.), द्विक (विज्ञाचार्य)
Bit Map = बिट मैप
Bit-wise operator = बिट-वाइज ऑपरेटर
Bold = बोल्ड, गहरा तथा मोटा
Boot = बूट, प्रपाद
Boot Sector = बूट सैक्टर, प्रारंभण क्षेत्र
Boot Strap Loader = बूट स्ट्रैप लोडर
Braching Factor = ब्राचिंग फैक्टर, ट्राइग्राम विश्लेषण में पिछले दो शब्दो से मिलने वाले तीसरे शब्द की सख्या
Bridge = ब्रिज, सेतु (विज्ञाचार्य)
Brouser = ब्राउजर, दृष्टागम (विज्ञाचार्य)
B.S.Key = बी.एस.-की
Buffer = बफर, अस्थाई मेमोरी, चयक (वै.त.श.आ.), द्वार्य (विज्ञाचार्य)
Bug = बग, दोष (वै.त.श.आ.), विकार (विज्ञाचार्य)
Building Block Concept based Keyboard = बिल्डिंग ब्लॉक कंसेप्ट बेस्ड की-बोर्ड,
बिल्डिंग ब्लॉक सकल्पना पर आधारित कुंजीपटल
Bullet = बुलेट
Cable = केबल, ततुवाही (विज्ञाचार्य)
Calculation = कैलकुलेशन, परिकलन (वै.त.श.आ.), अनुकलन
Calculation Symbol = कैलकुलेशन सिंबल, गणनाचिंह
Capacitive Switch Keyboard = केपेसिटिव स्विच की-बोर्ड
Capital Letter = कैपिटल लैटर, ओदय अक्षर (विज्ञाचार्य)
Capslock = कैप्स लॉक, ओदयक (विज्ञाचार्य)
Caption = कैप्शन

Caption Generator = कैप्शन जेनरेटर
Carbon = कार्बन
Carry = कैरी , हासिल (वीरेंद्र जैन), हस्तगत (वीरेंद्र जैन)
Cast Centra = कास्ट सेंट्र
C-Brain = सी-ब्रेन, पाकिस्तानी वाइरस
Central Processing Unit (CPU) = सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट, केंद्रीय संसाधन एकक
Central Virus Analysing Machine = सेंट्रल वाइरस एनालाइजिंग मशीन, केंद्रीय-वाइरस-विश्लेषण-मशीन
Centre = सेंटर, केंद्र
Chat = चैट, इंटरनेट पर बातें करना
Character = कैरेक्टर, अक्षर/चरित (विज्ञाचार्य), संप्रतीक (वै.त.श.आ.), वर्ण /स्वरूप /गुण (वीरेंद्र जैन)
Charged Couple Device = चार्ज्ड कपल डिवाइस
Chip = चिप, पटलिका (वै.त.श.आ.), चिप्पड़ (वीरेंद्र जैन)
Clipper = क्लीपर, प्रोग्रामिंग भाषा
Click Delay = क्लिक डिले, कुंजी की आवाज बदलने में सहायक
Clock = क्लॉक, कालद (वै.त.श.आ.)
Clock Circuit = क्लॉक सर्किट
Code = कोड, कूट (वै.त.श.आ.)
Coded = कोडेड, कोडित, कूटित, कूड लिखित (वै.त.श.आ.)
Collar = कॉलर, माउस के नीचे लगा हुआ गोलाकार ढक्कन
Colour = कलर, मेकरो वाइरस
Column = कॉलम, स्तंभ (वै.त.श.आ.)
Command = कमांड, निर्देश, समादेश (वै.त.श.आ.), अधिदेश (विज्ञाचार्य), आदेश (वीरेंद्र जैन),
Comment = कमेंट, टिप्पणी (वै.त.श.आ.)
Compatibility = कम्पेटेबिलिटी, अनुरूपता सुसंगति (वै.त.श.आ.), संगतता (वै.त.श.आ.), संगतेयता
Compiler = कंपाइलर, अनुवाषक (वै.त.श.आ.), संयोजक, संपादक (विज्ञाचार्य), संकलक
Compose = कंपोज
Computer = कंप्यूटर, संगणक (एस.वेंकटाचलम), 1.(मशीन) अभिकलित्र, 2. (मनुष्य) अभिकलक (वै.त.श.आ.), संपादयित्र (विज्ञाचार्य)
Computer Crime Legislation = कंप्यूटर क्राइम लेजिसलेशन, कंप्यूटर आपराध-रोधी विधान
Computer Oriented = कंप्यूटर ओरिएंटेड, अभिकलित्र-मूलक (वै.त.श.आ.), कंप्यूटरोन्मुख (बादल शर्मा),
Computer Programme = कंप्यूटर प्रोग्राम, अभिकलित्र क्रमादेश (वै.त.श.आ.) शब्द, कूट, स्कीम या किसी अन्य रूप में अभिव्यक्त अनुदेशों का समुच्चय (सैट)
Condensation = कंडेंसेशन
Conducive Switch Key-board = कंड्यूसिव स्विच की-बोर्ड
Conductor = कंडक्टर
Connector = कनेक्टर, संबधक (वै.त.श.आ.), संबंधक (विज्ञाचार्य)
Control = कंट्रोल, नियंत्रण (एस.वेंकटाचलम), संयम (विज्ञाचार्य)

Controller = कंट्रोलर, नियंत्रक
Conversion = कंवर्शन, बदलना, परिवर्तन, रूपांतरण (वै.त.श.आ.)
Conversion Text = कंवर्शन टेक्स्ट
Coral Draw = कोरल ड्रा, पैकेज
Cordlesss Keyboard = कॉर्ड-लैस की-बोर्ड
Corrupt Software = करप्ट सॉफ्टवेयर, खराब सॉफ्टवेयर
Contry Code = कंट्री कोड

Criminal Evidence Act = क्रिमीनल एवीडेंस एक्ट, आपराधिक साक्ष्य अधिनियम
Customise = कस्टोमाइज
Cursor = कर्सर, प्रसंकेतक (वै.त.श.आ.), मॉनीटर पर अगला काम करने का स्थान दर्शाने वाला तीर का निशान
Cursor Control = कर्सर कंट्रोल, कर्सर संयमन
Cursor-Key = कर्सर-की, प्रसंकेतक कुंजी
Data = डाटा, डेटा, तथ्य, आँकड़े (वै.त.श.आ.) धृति (विज्ञाचार्य), दत्त (वीरेंद्र जैन), आँकड़ा (एस.वेंकटाचलम)
Database = डाटाबेस, डेटाबेस, धृति-संकुल (विज्ञाचार्य), आँकड़ा-संचय (एस.वेंकटाचलम)
Data Character = डाटा केरेक्टर, डेटा केरेक्टर, आँकड़ा संप्रतीक
Data Coding = डाटा कोडिंग, डेटा कोडिंग
Data Entry System = डाटा एंटरी सिस्टम, डेटा एंटरी सिस्टम
Data Processor = डाटा प्रोसेसर, डेटा प्रोसेसर, डेटा संसाधन
Data Processing = डाटा प्रोसेसिंग, डेटा प्रोसेसिंग, आँकड़ा-प्रक्रमण, आँकड़ा संसाधन (एस.वेंकटाचलम)
Data Protection Act = डाटा प्रोटेक्शन एक्ट, डेटा प्रोटेक्शन एक्ट, आँकड़ा संरक्षण अधिनियम
Dated = डेटेड, तिथिबद्ध
Debug = डी-बग, दोषमार्जन (वै.त.श.आ.), निर्विकारण (विज्ञाचार्य)
Decimal = डेसीमल, दशमलव, दाशमिक
Decoding = डी-कोडिंग, कूट-वाचन
Dedicated = डेडीकेटेड, समर्पित
Default = डिफाल्ट व्यतिक्रम (वै.त.श.आ.), चूक (वै.त.श.आ.)
Delete = डिलीट, मिटाव, विलोप (वै.त.श.आ.), हटाना
Deskjet = डेस्कजेट
Devbase = देवबेस, डी-बेस-III प्लस के मानक पैकेज का द्विभाषी संस्करण
Device = डिवाइस, युक्ति (वै.त.श.आ.)
Devnagri = देवनागरी, एक लिपि
Diacretic Mark = डायाक्रिटीक मार्क, विशेषक चिह्न
Dialpad = डायलपैड
Dictation = डिक्टेशन
Digit = डिजिट, अंक (वीरेंद्र जैन)
Digital = डिजीटल, अंकीय (वीरेंद्र जैन)
Digital Circuit = डिजीटल सर्किट, अंकीय परिपथ
Digital Data = डिजीटल डाटा, डिजीटल डेटा
Digital Exhibit = डिजीटल एक्जीबिट, डिजीटल प्रदर्शन

Digital Ink = डिजीटल इंक
Digital Petridish = डिजीटल पेट्रीडिश
Digital Representation = डिजीटल रिप्रेजेंटेशन, अंकीय निरूपण
Digital Watch = डिजीटल वॉच, अंकीय घड़ी
Directory = डाइरेक्ट्री, निर्देशिका (वै.त.श.आ.)
Disable Software = डिस-एबल सॉफ्टवेयर
Disc Drive = डिस्क-ड्राइव
Disk = डिस्क, चकती (विज्ञाचार्य), चक्रिका (एस.वेंकटाचलम)
Distributed = डिस्ट्रीब्यूटेड, वितरित
Divya = दिव्य, हिंदी फोंट्स-सैट
Document = डॉक्यूमेंट, प्रलेख (वै.त.श.आ.)
Documentation = डॉक्यूमेंटेशन, अभिलेखीकरण, प्रलेखन (वै.त.श.आ.)
Domain = डोमेन, प्रक्षेत्र /अनुक्षेत्र (एस.वेंकटाचलम)
DOS Prompt = डॉट प्रांप्ट
Dot Matrix = डॉट मैट्रिक्स
Download = डाउनलोड, आउटपुट लेना, प्राप्त करना
Dragon = ड्रेगन, स्कैनसॉफ्ट कंपनी का आवाज पहचानक
Driver = ड्राईवर, चालक
DVORAK = डीवोरक, कुंजीपटल का प्रकार,
स्वर एवं व्यंजन की कुंजियों की पृथक-पृथक प्रस्तुति
Duplicate = डुप्लीकेट, अनुलिपि
E-Commerce = ई-कामर्स
Edit = एडिट, संपादन (वै.त.श.आ.)
Edition = एडीशन, संस्करण, संकलन (विज्ञाचार्य)
Effel = एफेल, अनुप्रयोग भाषा
Eight (8) Bit Mode = ऐट (8)-बिट मोड, आठ-द्वयंक मोड
Electric Contact/Link = इलैक्ट्रिक कांटेक्ट/लिंक, विद्युत संपर्क
Electric Current = इलैक्ट्रिक करेंट, विद्युत धारा
Electric Flow = इलैक्ट्रिक फ्लो, विद्युत प्रवाह
Electric Pulse = इलैक्ट्रिक पल्स, विद्युत स्पंदन
Electric Volt = इलैक्ट्रिक वोल्ट, विद्युत विभव
Electronic = इलैक्ट्रॉनिक, वैद्युतिक (विज्ञाचार्य)
Electronic Ear = इलैक्ट्रॉनिक इयर, इलैक्ट्रॉनिक कान,
कंप्यूटर में प्रयुक्त माइक्रोफोन
Electronic Gate = इलैक्ट्रॉनिक गेट
Electronic Typewriter = इलैक्ट्रॉनिक टाइपराइटर
E-letter = ई-लैटर, ई-पत्र
E-mail = ई-मेल, इलैक्ट्रॉनिक मेल, अणु-डाक (पांचजन्य)
Encoding = एनकोडिंग, कूट-लेखन
Encoding Number = एनकोडिंग नंबर, कूटांक
End = एंड, अंत (विज्ञाचार्य)
Enhanced Keyboard = एनहैंस्ड की-बोर्ड, संवर्धित कुंजीपटल,
101-कुंजी वाला कुंजीपटल
Enter = एंटर, प्रवेश (वै.त.श.आ.)
Environment = एनवायरनमेंट, वातावरण, परिवेश (वै.त.श.आ.)
ERASE-EASE key = ईरेज-ईज-की, ईरेज-ईज-कुंजी, बैक-स्पेस कुंजी

Ergonomic = एरगोनोमिक, कुंजीपटल का प्रकार
Escape = एस्केप, क्रिया त्याग, पलायन (वै.त.श.आ.)
Ether Bet = ईथरबेट
Executable = एक्जीक्यूटेबल, क्रियान्वयनशील
Execute =एक्जीक्यूट, कार्यान्वित करना, निष्पादन (वै.त.श.आ.)
Execution = एक्जीक्यूशन, कार्यान्वयन, अनुपालन (विज्ञाचार्य)
Expansion = एक्सपेंशन, विस्तार
Explorer = एक्सप्लोरर
Expression = एक्सप्रेशन, व्यक्तव (विज्ञाचार्य)
Extended ASCII = एक्सटेंडेड आस्की, संवर्धित आस्की
Extended Code (EXT) = एक्सटेंडेड कोड, विस्तारित कूट
Extended Keyboard = एक्सटेंडेड की-बोर्ड
EzBall = ई जेड बाल, कुंजीपटल तकनीक
Ezerty = एजर्टी, कुंजीपटल का प्रकार
Face Value = फेस वेल्यू, मुख-मान
FACT = फैक्ट, लेखा सॉफ्टवेयर
Feed = फीड, डालना, भरना, भरण
Find replace = फाइंड रिप्लेस
Firmware = फर्मवेयर, प्रक्रिया यंत्र सामग्री (वै.त.श.आ.),
सतत सामग्री (वीरेंद्र जैन)
FK-7200 = एफके-7200, फंक्शन-की-7200, बहु उपयोगी कुंजीपटल
Floating Keyboard = फ्लोटिंग की-बोर्ड, स्क्रीन कुंजीपटल,
कार्य करते समय स्क्रीन पर प्रदर्शित कुंजी पटल
Floppy Disk = फ्लॉपी डिस्क, नम्यिका (वै.त.श.आ.)
Font = फोंट, रूप, प्रतिमान, फांट (वै.त.श.आ.)
Formalised = फार्मलाइज्ड, रीतिबद्ध
Format = फार्मेट, प्रारुप, ढाँचा, संरूप (वै.त.श.आ.)
Formatting = फार्मेटिंग
Formula = फार्मूला, सूत्र
Forward Slant = फॉरवर्ड स्लांट
Fraction = फ्रेक्शन, भिन्नांक
Free Standing Microphone = फ्रीस्टैंडिंग माइक्रोफोन
Frequency = फ्रीकवेंसी, आवृत्ति (वै.त.श.आ.), बारंबारता (वै.त.श.आ.),
कम्पता (विज्ञाचार्य)
Function = फंक्शन, कार्य
1. फलन, 2. प्रकार्य (वै.त.श.आ.)
कर्त्यन (विज्ञाचार्य)
Function Code = फंक्शन कोड
Function Key = फंक्शन-की, फलन कुंजी, प्रकार्य कुंजी (वै.त.श.आ.)
कर्त्य कुंजी, कर्त्यन कुंजी (विज्ञाचार्य),
Foxbase = फॉक्सबेस, अनुप्रयोग पैकेज
Foxpro = फॉक्सप्रो, एक अनुप्रयोग प्रोग्रामिंग भाषा
GAMM = यूरोप की संस्था
Generation = जेनरेशन, जनन, पीढी (विज्ञाचार्य)
GIST = जिस्ट
GIST Card = जिस्ट-कार्ड

GIST Shell = जिस्ट-शैल
GIST Terminal = जिस्ट टर्मीनल
Glass Cleaner = ग्लास क्लीनर
Glide Point Keyboard = ग्लाइड पाइंट की-बोर्ड
Glide Point Pointing Device = ग्लाइड पाइंट पोइंटिंग डिवाइस,
कर्सर की स्थिति हेतु सॉफ्टवेयर
Glif Standard = ग्लिफ स्टैंडर्ड,
भारतीय लिपियों के सभी वर्णों के ग्लिफ या स्लाइस मानक
Graph = ग्राफ
Graphic Design = ग्राफिक डिज़ाइन, आरेखी डिजाइन
Graphics = ग्राफिक्स, चित्र, आरेखी, अनुचित्र (विज्ञाचार्य)
Grid = ग्रिड, पंक्तियों और कॉलमों का समूह
Guru = गुरु, हिंदी सीखने का मल्टी मीडिया सीडी रोम
GW = जी.डब्ल्यू, प्रोग्रामिंग भाषा
Halant Code = हलंत कोड
Handset Microphone = हैंडसेट माइक्रोफोन, आवाज पहचानक का अंग
Handwriting Recognition = हैंडराइटिंग रेकॉग्निशन, हस्तलेखन पहचान
Hard Disk = हार्ड डिस्क, अनम्यिका (वैतशआ)
Hardware = हार्डवेयर, यंत्र-सामग्री (वैतशआ), यथावस्तु (विज्ञाचार्य),
कठोर सामग्री (वीरेंद्र जैन), अनम्यिका (एस.वेंकटाचलम)
Help = हेल्प, सहायता
Heuistic = ह्यूरिस्टिक, स्वानुभाविक (वैतशआ)
Heuristic Scanning = ह्यूरिस्टिक स्कैनिंग, वाइरस रोधी उपकरण,
अनजाने व नए वाइरस का पता लगाने में सक्षम
Hexa-decimal = हेक्सा-डेसीमल, षोडश, षटदाशमिक,
षोडश आधारी (वैतशआ), षष्ठ-दशांकी (विज्ञाचार्य)
High-Level Language = हाई-लेवल लैंग्वेज,
उच्च-स्तरीय भाषा
High Technology = हाई-टेक्नोलॉजी, उच्च तकनीक
Hindi PC-Dos = हिंदी पी.सी.-डॉस
Home = होम, पारस्थल
Home Computer = होम कंप्यूटर
Human Language = ह्यूमन लैंग्वेज, मानव भाषा
Hybrid = हाइब्रिड, संकर
Icon = आईकॉन, प्रतिमा
Ideograph = आइडियोग्राफ, भावचित्र
कंजी (जापानी में)
Indian Copyright Act = इंडियन कॉपीराइट एक्ट, भारतीय कॉपीराइट अधिनियम
Indica = इंडिका, हिंदी सॉफ्टवेयर पैकेज
Indicated Light = इंडिकेटेड लाइट, इंगित्र ज्योति
Indo-Arabian/ Arabic Number = इंडो-अरेबियन/अरेबिक नंबर,
भारतीय-अरबी संख्या
Import = इंपोर्ट, आयात
Infrared = इंफ्रारेड, अवरक्त
Input = इनपुट, अंतर्पात (विज्ञाचार्य), निविष्ट (वीरेंद्र जैन),
निवेश (एस.वेंकटाचलम)

Inscript = इनस्क्रिप्ट, इंडियन स्क्रिप्ट
Insert = इंसर्ट, मध्यस्थापन, निवेशन (वैतशआ)
Installation = इंस्टालेशन, अधिष्ठापन (वैतशआ),संस्थापन (विज्ञाचार्य)
Integrated Circuit = इंटीग्रेटेड सर्किट, समेकित परिपथ (एस.वेंकटाचलम), एकीकृत परिपथ
Interactive = इंटरएक्टिव, अन्योन्य क्रिया (वैतशआ), संवर्क्रिया-वृत्ति (विज्ञाचार्य)
Interface = इंटरफेस, मध्यवर्ती, अंतर्पृष्ठ, अंतरापृष्ठ (वैतशआ)
Interface Language = इंटरफेस लैंग्वेज
Interference = इंटरफियरेंस, व्यतिकरण
Internal Dictionary = इंटरनल डिक्शनरी, आवाज पहचानक का अंग
Internet = इंटरनेट, अंतर्राष्ट्रीय जालक्रम (एस.वेंकटाचलम), अंतरताना (पांचजन्य)
Internet Explorer = इंटरनेट एक्सप्लोरर
Internet Mail = इंटरनेट मेल, ई-मेल
Internet Service Provider = इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर, इंटरनेट सेवा प्रदाता
Internet Software = इंटरनेट सॉफ्टवेयर
Interpreter = इंटरप्रेटर, दुभाषिया, प्रतिपादक, निर्वचक (वैतशआ)
Interrupt (INT) = इंटरप्ट, व्यवधान, अंतरायन (वैतशआ)
Interrupt Command = इंटरप्ट कमांड, टोक कमांड
Inventory = इंवेंट्री, तालिका (वीरेंद्र जैन)
ISCII = इस्की, सूचनाओं के अंतरांतरण (अंतर-अंतरण) के लिए भारतीय लिपि संबंधी मानक कूट
ISM = इज़्म, हिंदी सॉफ्टवेयर पैकेज, हिंदी फोंट वाले सॉफ्टवेयर
ISFOC = इस्फोक, फोंट कूटीकरण के लिए भारतीय मानक
Isfoc font = इस्फॉक फोंट
Italic = इटैलिक, तिरछे अक्षर
JAVA = जावा, इंटरनेट प्रोग्रामिंग भाषा
Jump Instruction = जंप इंस्ट्रक्शन, झंपक अनुदेश (वैतशआ)
Justification = जस्टीफिकेशन, औचित्य (वैतशआ)
Kernel = कर्नेल प्रचालन प्रणाली का केंद्रीय मॉड्यूल
Key Board = की-बोर्ड, कुंजीपटल
KEYCLICK = की-क्लिक, कुंजीटक (वैतशआ), कुंजी दबने का संकेत आवाज से दिलाने में सहायक
Key-Hotmail = की-हॉटमेल
Key Stroke = की-स्ट्रोक, कुंजी आघात (वैतशआ), कुंजीदोल (विज्ञाचार्य), दबाई गई कुंजी,
LAN Environment = लैन एनवायरनमेंट, लैन वातावरण/परिवेश
Language Model = लैंग्वेज माडल, आवाज पहचानक का अंग
LAN Protocol = लैन प्रोटोकॉल
Laptop = लैपटॉप
Leap Light = लीप लाइट, लीप ऑफिस का डैमो संस्करण
Leap Office = लीप ऑफिस, इंटरफेस, हिंदी फोंट वाले सॉफ्टवेयर भारतीय भाषाओं का शब्द संसाधक
Learnwrite & Haspi = लर्नराइट एंड हॉस्पी,माइक्रोसॉफ्ट निर्मित आवाज-पहचानक,जिसे बाद में स्कैन सॉफ्ट ने खरीद लिया। पहले यह ड्रैगन शीर्षक से था।

Left = लेफ्ट, बाँया, वाम
Left Handed Keyboard = लेफ्ट हेंडेड की-बोर्ड
Letter Wizard = लैटर विजार्ड, अक्षर विजार्ड
Line = लाइन, रेखवाही (विज्ञाचार्य)
Linear = लीनियर, रैखिक
Line Matrix = लाइन मैट्रिक्स
Linux = लाइनक्स
Literal = लिटरल, आक्षर (वैतशआ),
सामान्य वेल्यू (मान) दर्शाने के लिए प्रयुक्त
Lock = लॉक,तालकन/तालक (वैतशआ)
Lock Switch = लॉक स्विच, ताला-बंद करने वाली स्विच
Logical Inference = लॉजिकल इंफरेंस, तार्किक अनुमान
Logical Operation = लॉजिकल ऑपरेशन, तर्कसंगत संक्रिया (वैतशआ),
तार्किक प्रचालन
Logical Operator = लॉजिकल ऑपरेटर, तर्कसंगत संकारक (वैतशआ),
तार्किक प्रचालक
Login = लोगिन, सत्रारंभ (वैतशआ)
Logo = लोगो, बच्चों के लिए तैयार प्रोग्रामिंग भाषा
LOTUS = लोटस, प्रोग्रामिंग भाषा
Low Level Language = लो-लेवल लैंग्वेज, निम्न-स्तरीय भाषा
Machine Code = मशीन कोड, यंत्र कूट (वैतशआ)
Machine Language = मशीन लैंग्वेज, मशीनी भाषा, यंत्र भाषा (एस.वेंकटाचलम)
Macintosh = मैकिंतोश
एक सिस्टम सॉफ्टवेयर
Macro Virus = मेकरो वाइरस,
एक ही शीर्षक के तहत अनेक कमांड का एकत्र होना
Magnet = मैग्नेट, चुंबक
Magnetic Tape = मैग्नेटिक टेप, चुंबकीय टेप (वैतशआ),
चुंबकीय फीता (एस.वेंकटाचलम)
Mail Merge = मेल मर्ज, संचिका विलय
Mantra Online = मंत्र ऑनलाइन, इंटरनेट सेवा प्रदाता
Mapped = मैप्ड, मानचित्रित, प्रतिचित्रित (वैतशआ)
Mapping = मैपिंग, मानचित्रण करना, प्रतिचित्रण (वैतशआ)
प्रोग्राम का स्वरूप प्रदर्शित करना
Margin = मार्जिन, उपांत (वैतशआ)
Marvel = मार्वल, अनुप्रयोग भाषा
Master = मास्टर, प्रधान (वैतशआ)
Mat = मैट, अँग्रेजी से हिंदी में अनुवाद सॉफ्टवेयर
Matching = मैचिंग, मिलान, समदृश्यन (विज्ञाचार्य)
Mathematical Operation = मैथमैटिकल ऑपरेशन, गणितीय संक्रिया
Mechanical Gesture or Innovation Data = मैकेनिकल गेश्चर ऑर इनोवेशन डेटा,
याँत्रिक चेष्टाएँ या प्रवर्तन संबंधी डेटा
Mechanical Switch Keyboard = मैकेनिकल स्विच की-बोर्ड, याँत्रिक स्विच वाले कुंजीपटल
Megabyte = मैगाबाइट
Membrane Switch Keyboard = मेंब्रेन स्विच की-बोर्ड, मेंब्रेन स्विच वाले कुंजीपटल
Memory = मैमोरी, स्मृति (एस.वेंकटाचलम), स्मरणिका

Mhz (Mega Hertz) = मैगाहर्ट्ज
Michigan Computer Law = मिशीगन कंप्यूटर लॉ,
मिशीगन अभिकलित्र कानून
Micro Computer = माइक्रो कंप्यूटर, सूक्ष्म अभिकलित्र (वैतशआ)
Micro Processor = माइक्रो प्रोसेसर, सूक्ष्म संसाधित्र (वैतशआ)
Miniature Pop up Menu = मिनिएचर पॉप अप मेनू
M.Language = एम.लैंग्वेज, अनुप्रयोग भाषा
Mnemonic = नेमोनिक, स्मरक (वैतशआ)
Modem = मोडेम
Modifier = मॉडिफायर, आपरिवर्तक (वैतशआ),
विशोधक (विज्ञाचार्य), संशोधक,
Modula = मोड्यूला, माड्युला (वैतशआ), अनुप्रयोग भाषा
Monitor = मॉनीटर, मॉनिटर (वैतशआ), प्रेक्षक (विज्ञाचार्य)
Morphemic = मोरफेमिक, रूपमिक
Mouse = माउस, चूहा (एस.वेंकटाचलम)
Mouthstick Keyboard = माउथस्टिक की-बोर्ड
MS Excel = माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल, सॉफ्टवेयर पैकेज
MSO Hindi Word 2000 = माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस हिंदी वर्ड 2000, हिंदी सॉफ्टवेयर
MS Page Maker = माइक्रोसॉफ्ट पेजमेकर, सॉफ्टवेयर पैकेज
MS Power Point = माइक्रोसॉफ्ट पावर पाइंट, सॉफ्टवेयर पैकेज
MS Word = माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, सॉफ्टवेयर पैकेज
Multi-media = मल्टी मीडिया
Multiplexing = मल्टीप्लेक्सिंग
Multi-tasking = मल्टी-टास्किंग, बहुप्रयोजनीय
Multi-Threading = मल्टी-थ्रेडिंग
Multi-word = मल्टी-वर्ड, बहुभाषी शब्द संसाधन पैकेज
N-Trans = एन-ट्रांस, नागानुवाद
Nano = नैनो, 10^{-9}, इकाई का उपसर्ग, नन्हा अंश,
Natural Speaking = नैचुरल स्पीकिंग, प्राकृतिक वार्ता
Nemesis = नेमेसिस, मेकरो वाइरस
Net 4 India = नेट 4 इंडिया, इंटरनेट सेवा प्रदाता
Net Contender = नेट कंटेंडर
Net Kracker = नेटक्रेकर, इंटरनेट सेवा प्रदाता
Netscape = नेटस्केप, ब्राउजर प्रोग्राम
Network = नेटवर्क, जालक्रम (वैतशआ), तंत्र (विज्ञाचार्य), संजाल
Nisha = निशा, हिंदी फोंट्स-सैट
Nodes = नोड्स, गुंठ (विज्ञाचार्य)
नुक्कड़ (सिंघल + गुप्ता + डॉ.गुप्ता)
Non-Conducting = नॉन-कंडक्टिंग
Normal Character = नार्मल केरेक्टर, प्रसामान्य केरेक्टर
NPAd = एन पैड, मेकरो वाइरस
Nuclear = न्यूक्लियर, मेकरो वाइरस
Nukta Code = नुक्ता कोड
Num Lock = नम-लॉक
Number System = नंबर सिस्टम, संख्या पद्धति
Numeric = न्यूमेरिक, संख्यांक (वैतशआ)सांख्यिक

Object Code = ऑब्जेक्ट कोड,अभिलक्ष्य कूट (वैतशआ),
वस्तु कूट (एस.वेंकटाचलम)
Object Program = ऑब्जेक्ट प्रोग्राम, अभिलक्ष्य क्रमादेश (वैतशआ)
Octal = ऑक्टल, अष्टमिक, अष्टाधारी (वैतशआ)
Office Automation = ऑफिस आटोमेशन, कार्यालय स्वचालन (वैतशआ)
Off = ऑफ, बंद, पृथ (विज्ञाचार्य)
Off Screen = ऑफ-स्क्रीन
On = ऑन, चालु, अथ (विज्ञाचार्य)
On Screen = ऑन-स्क्रीन
Open Domain = ओपन डोमेन, मुक्त क्षेत्र
Operand = ओपरेंड, संकार्य (वैतशआ), परिचार्य (विज्ञाचार्य)
Operating System = ऑपरेटिंग सिस्टम, प्रचालन तंत्र (वैतशआ), प्रचालन प्रणाली
Operation = ऑपरेशन, परिचारण (विज्ञाचार्य), प्रचालन, संक्रिया, क्रिया
Operation Code = ऑपरेशन कोड, संक्रिया कूट (वैतशआ)
Operator = 1.ऑपरेटर, प्रचालक (वैतशआ) 2.संकारक (वैतशआ),
परिचारक (विज्ञाचार्य), प्रवर्तक
Optical Lateral rilt = ऑप्टीकल लेटेरल रिल्ट
Optical Split Keyboard = ऑप्टीकल स्प्लिट की-बोर्ड,
प्रकाशिक विभाजित कुंजी-पटल
Option = ऑप्शन, विकल्प (वैतशआ), ऐक्ष (विज्ञाचार्य)
Oracle = ओरेकल, एक सिस्टम सॉफ्टवेयर, डाटाबेस मेनेजमेंट सिस्टम
Order = ऑर्डर, अधिदेश, क्रम, आज्ञा (विज्ञाचार्य)
Outlay = आउटले
Output = आउटपुट, निर्गम (वैतशआ), बहिर्पात (विज्ञाचार्य), बहिर्वेश
Overlay = ओवरले, अधिचित्र
Overwrite = ओवरराइट, ऊपरिलेखन
Pad = पैड
Page Down = पेज डाउन, पूर्व पृष्ठ (विज्ञाचार्य), अगला पृष्ठ
Page Footer = पेज फुटर
Page Header = पेज हैडर
Page Layout = पेज ले-आउट
Pagemaker = पेजमेकर
Page Up = पेज अप, उत्तर पृष्ठ (विज्ञाचार्य), पिछला पृष्ठ
Palm Support Keyboard = पाम सपोर्ट की-बोर्ड,
हथेली टेकने की सुविधा से संपन्न कुंजीपटल
Paper Management System = पेपर मेनेजमेंट सिस्टम
Paradox = पैराडॉक्स, अनुप्रयोग पैकेज
Paragraph = पैराग्राफ, पैरा (वैतशआ)
Paragraph Style = पैराग्राफ स्टाइल
Param = परम, सुपर कंप्यूटर
Parser = पार्सर, पद-निरूपक
Parsing = पार्सिंग, पद-निरूपण, पद व्याख्यायित्र (वैतशआ)
Partition Table = पार्टीशन टेबल, विभाजन तालिका
Pascal = पास्कल, प्रोग्रामिंग भाषा
Password = पासवर्ड, पारण शब्द (वेंकटाचलम, वैतशआ),
पारशब्द (विज्ञाचार्य)

Pattern = पैटर्न, प्रतिरूप (वैतशआ), चित्राम
Pause = पॉज, विराम
PC Stond = पी.सी.स्टोंड, एक वाइरस
Pearl = पर्ल, अनुप्रयोग भाषा
Personal Computer = पर्सनल कंप्युटर, वैयक्तिक अभिकलित (वैतशआ), व्यक्तिगत संगणक
Phonetic = फोनेटिक, ध्वन्यात्मक, स्वन (वैतशआ)
Photoshop = फोटोशॉप, पैकेज
Photo type Setting Machine = फोटो टाइप सैटिंग मशीन
Physical Link = फिजीकल लिंक, भौतिक संपर्क
Pictorial = पिक्टोरियल, चित्रमय
Piracy = पाइरेसी, सॉफ्टवेयर-चोरी
Pitch = पिच, संप्रतीक अंतराल (वैतशआ)
Pitch & Sound = पिच एंड साउंड
Pixel (Picture Element) = पिक्सेल, चित्र अवयव (वैतशआ), चित्रांश (विज्ञाचार्य),
Place Value = प्लेस वेल्यू, स्थान-मान
Plate = प्लेट
Platform Support = प्लेटफार्म सपोर्ट
Plunger = प्लंगर
Port = पोर्ट, तोरण (विज्ञाचार्य)
Portable = पोर्टेबल
Portal = पोर्टल
Post Script = पोस्ट स्क्रिप्ट, अनुप्रयोग भाषा
Prakashak = प्रकाशक, वेंचुरा सॉफ्टवेयर आधारित पैकेज, बहुभाषी पैकेज
Presentation = प्रेजेंटेशन, प्रस्तुति
Primary Memory = प्राइमरी मेमोरी, प्राथमिक स्मृति (वैतशआ), प्राथमिक भंडारण क्षेत्र
Primary Response = प्राइमरी रेस्पांस
Primitive Data Type = प्रिमीटिव डेटा टाइप, पूर्वग आँकड़ा प्रकार (वैतशआ)
Printer = प्रिंटर, मुद्रित्र (वैतशआ), मुद्रक (वीरेंद्र जैन)
Print Screen = प्रिंट स्क्रीन
Processing = प्रोसेसिंग, संसाधन (वैतशआ), परिष्कारण (विज्ञाचार्य), प्रक्रमण (वीरेंद्र जैन)
Program = प्रोग्राम, क्रमादेश (वैतशआ), प्रक्रम (विज्ञाचार्य), निर्देशों/आदेशों का क्रमबद्ध समूह
Programmer = प्रोग्रामर, क्रमादेशक/क्रमादेशित्र (वैतशआ)
Programming Language = प्रोग्रामिंग लैंग्वेज, प्रोग्रामिंग भाषा
Pronounciation = प्रोननसिएशन, उच्चारण
Publishing Work = पब्लिशिंग वर्क, प्रकाशन कार्य
Punched Card = पंच्ड कार्ड, छिद्रण पत्रक (वैतशआ), छिद्रित पत्रक (वीरेंद्र जैन, एस.वेंकटाचलम)
Q-BASIC = क्यू-बेसिक, कंप्यूटर पैकेज
Quantum = क्वांटम
Quataro Pro = क्वाटरो-प्रो, कंप्यूटर पैकेज
Qwerty = क्वर्टी, कुंजीपटल का प्रकार, प्रथम पंक्ति की पहली छः कुंजियाँ

Radio Receiver = रेडियो रिसीवर
Remington Typewriter = रेमिंग्टन टाइपराइटर
Reprogram = रिप्रोग्राम
Return = रिटर्न, प्रतिगमन (वैतशआ)
Resolution = रिजोल्यूशन, मात्रक (वैतशआ), विघटन, वियोजन, विभेदन
RETRO = रीट्रो, वाइरस
Reverse Slant = रिवर्स स्लांट
Right = राइट, दक्षिण (वैतशआ), दाँया, दाहिना
Right Handed Keyboard = राइट हेंडेड की-बोर्ड
Roman Script = रोमन स्क्रिप्ट, रोमन लिपि
Roman System = रोमन सिस्टम, रोमन पद्धति
Row = रो, पंक्ति (वैतशआ)
Sample = सैंपल, एनालॉग तरंगों को डिजीटल डेटा में बदलना
Sampling = सैंपलिंग, 1.प्रतिदर्शी 2.प्रतिचयन (वैतशआ)
Sancharnet = संचार नेट, सार्वजनिक नेटवर्क
Satyam Online = सत्यम ऑनलाइन, इंटरनेट सेवा प्रदाता
Save = सेव, बचाना, संरक्षित करना, सुरक्षा
Scan = स्कैन, क्रमवीक्षण (वैतशआ), अंवीक्षा (विज्ञाचार्य)
Scanner = स्कैनर, क्रमवीक्षक (वैतशआ), अंवीक्षक (विज्ञाचार्य)
Scanner Keyboard = स्कैनर की-बोर्ड, कुंजीपटल और स्कैनर का संयुक्त रूप
Scanning = स्कैनिंग, क्रमवीक्षण
Screen = स्क्रीन, प्रपट्ट (वैतशआ), दृश्यध (विज्ञाचार्य)
Script = स्क्रिप्ट, लिपि
Script Language = स्क्रिप्ट लैंग्वेज
Scroll = स्क्रॉल, परिलुठन (वैतशआ)
Scroll Lock = स्क्रॉल लॉक, सरकन निषिद्ध
Search = सर्च, खोज
Selection = सेलेक्शन, वरण (वैतशआ)
Selectable Toggle Switch = सेलेक्टेबल टॉगल स्विच
Self-application = सेल्फ-एप्लीकेशन, स्व-अनुप्रयोग
Sensor = सेंसर, संवेदित्र (वैतशआ)
Separate Nevigation = सैपेरेट नेविगेशन
Serial Port = सीरियल पोर्ट, क्रमिक संद्वार (वैतशआ)
Server = सर्वर, परिसेवक (वैतशआ)
Seven (7) Bit Mode = सेवन (7)-बिट मोड/प्रकार
Shabdamala = शब्दमाला, बहुभाषी शब्द संसाधन पैकेज
Shabdaratna = शब्दरत्न, बहुभाषी शब्द संसाधन पैकेज
Shadows = शैडोज, छाया
Shift = शिफ्ट, विस्थापन (वैतशआ), विस्थ (विज्ञाचार्य), अंतरण
Shimla = शिमला, पहली ऑब्जेक्ट ओरिएंटेड भाषा
Shrilipi = श्रीलिपि, भारतीय भाषाओं का फोंट पैकेज
Shri-Lipi Ankur = श्रीलिपि अंकुर, कंप्यूटर सुविधा
Sigma Online = सिगमा ऑन लाइन, इंटरनेट सेवा प्रदाता
Signal = सिग्नल, संकेत (वैतशआ), संकेतक (वीरेंद्र जैन)
Signature = सिग्नैचर, हस्ताक्षर, प्रतीक-चिह्न (धुरेंद्र+रजवंत सिंह)
Silicon = सिलीकोन, सिलिकन

Single Finger & Single Head Keyboard = सिंगल फिंगर एंड सिंगल हेड की-बोर्ड,
Single Handed Keyboard = सिंगल हेंडेड की-बोर्ड,
एक हाथ वाले के लिए उपयोगी कुंजीपटल

Site	= साइट, वेब पेज
Situation Code	= सिचुएशन कोड, स्थिति कोड, स्थिति कूट
Slice	= स्लाइस, कतली (वैतशआ)
Slice Standard	= स्लाइस स्टैंडर्ड, भारतीय लिपियों के सभी वर्णों के स्लाइस या ग्लिफ मानक
Slot	= स्लॉट, खांचा (वैतशआ)
Small Letter	= स्मॉल लैटर, उच्च अक्षर (विज्ञाचार्य), लघु/छोटे अक्षर
Small Talk	= स्मॉल टॉक, अनुप्रयोग भाषा
Softbase	= सॉफ्टबेस
Software	= सॉफ्टवेयर, प्रक्रिया-सामग्री (वैतशआ), परावस्तु (विज्ञाचार्य), मृदु सामग्री /यंत्रेतर सामग्री (वीरेंद्र जैन)
Software Developer	= सॉफ्टवेयर डेवलपर, सॉफ्टवेयर विकासकर्ता, प्रक्रिया सामग्री विकासकर्ता
Software Package	= सॉफ्टवेयर पैकेज, प्रक्रिया सामग्री पैकज (वैतशआ), एक उपयोक्ता के स्थान पर अनेक उपयोक्ताओं द्वारा प्रयोग किए जाने वाला प्रोग्राम
Software Protection	= सॉफ्टवेयर प्रोटेक्शन
Sorting	= सोर्टिंग, शाटन (वैतशआ), छँटाई
Sound Card	= साउंड कार्ड
Source Code	= सोर्स कोड, स्रोत कूट (वैतशआ)
Source Program	= सोर्स प्रोग्राम, स्रोत क्रमादेश (वैतशआ)
South Asia Edition	= साउथ एशिया एडीशन, दक्षिण एशिया संस्करण
Space Bar	= स्पेस बार, रिक्ति पट्टिका
Speaker	= स्पीकर, वाक्यंत्र (विज्ञाचार्य)
Special Function Key	= स्पेशल फंक्शन-की, विशेष क्रिया कुंजी
Speech Navigation	= स्पीच नैविगेशन, वाक् नेविगेशन
Speech Pattern	= स्पीच पैटर्न, वाक् प्रतिरूप
Speech Recognition	= स्पीच रिकग्नीशन, वाक् अभिज्ञान, आवाज पहचानक, ध्वनि अभिज्ञाता
Spell Checking	= स्पैल-चैकिंग, वर्तनी-जाँच
Split Keyboard	= स्प्लिट की-बोर्ड, विभक्त कुंजी-पटल, कई हिस्सों में बँटा कुंजीपटल
Spread Sheet	= स्प्रैडशीट, अनुप्रयोग भाषा
Standard	= स्टैंडर्ड, अभीष्ट (विज्ञाचार्य), मानक
Start	= स्टार्ट, प्रारंभ/प्रारंभक (वैतशआ), आरंभ, शुरु
Statement	= स्टेटमेंट, कथन (वैतशआ, विज्ञाचार्य)
Structured Language	= स्ट्रक्चर्ड लैंग्वेज,संरचित भाषा (वैतशआ) कई भागों में बाँट कर तैयार स्वतंत्र प्रोग्राम-भाषा
Sub-group facility	= सब-ग्रुप फेसीलिटी, उप समूह/दल सुविधा
Subroutine	= सबरूटीन, उपनेमका (वैतशआ)
Subscribe	= सबस्क्राइब, पादांकन /पादाक्षरन (वैतशआ), उपचय (विज्ञाचार्य)
Substract	= सबसट्रेक्ट, व्यवकलन (वैतशआ), घटाव, घटाना
Sulaser	= सुलेजर, हिंदी सॉफ्टवेयर पैकेज

Sulekh = सुलेख, हिंदी सॉफ्टवेयर
Sulipi = सुलिपि, हिंदी बहुउद्देशीय सॉफ्टवेयर
Superscribe = सुपरस्क्राइब, मूर्धांकन (वैतशआ)
Support System = सपोर्ट सिस्टम, सहायक प्रणाली
Supporting Roller = सपोर्टिंग रोलर
Suwindow = सुविंडो, इंटरफेस, हिंदी सॉफ्टवेयर
Switching Circuit = स्विचिंग सर्किट, स्विचन परिपथ (वैतशआ)
Sybase = साईबेस
Symbol = सिंबल, प्रतीक (वैतशआ)
Syntax = सिनटैक्स, वाक्य रचना (वैतशआ)
Synthesis = सिंथेसिस, संश्लेषण
System Software = सिस्टम सॉफ्टवेयर, प्रणाली सॉफ्टवेयर
System Unit = सिस्टम यूनिट, प्रणाली इकाई
Tab = टैब, कुदान (विज्ञाचार्य), कर्सर को कुदा कर आगे ले जाने वाला
Tablet PC = टैबलेट पीसी
Tabulation = टेबूलेशन, सारिणी कार्य
TAG = टैग, ट्री एडज्वाइनिंग ग्रामर, नथ (विज्ञाचार्य), वृक्ष संलग्न व्याकरण (विजय मल्होत्रा), वृक्ष निकटस्थ व्याकरण
Tally = टैली, लेखा क्षेत्र का सॉफ्टवेयर प्रोग्राम
Task bar = टॉस्क बार
Teleprompting = टेलीप्रांप्टिंग
Telnet = टेलनेट, दूरजाल (एस.वेंकटाचलम), कंप्यूटर को इंटरनेट से जोड़ने का सर्वर
Template = टेंप्लेट
Terminal = टर्मिनल, टर्मीनल, अंतक (वैतशआ), व्याहितक (विज्ञाचार्य)
Terminate = टर्मीनेट, सीमित
Text = टेक्स्ट, पाठ्यांश (वैतशआ), अनुप्रयोग भाषा
Textual Data = टेक्सचुअल डेटा, पाठ्य या लिखित डेटा, लिपिबद्ध डेटा
Theft Act = थेफ्ट एक्ट, चोरी अधिनियम
Toggle = टॉगल, एकान्य, द्विदिशी
Token Ring = टोकन रिंग
Tool Command Language (TCL) = टूल कमांड लैंग्वेज (टीसीएल), अनुप्रयोग भाषा
Track Ball = ट्रैक बॉल, पथ गेंद (वैतशआ)
Training Software = ट्रेनिंग सॉफ्टवेयर, शब्दों की पहचान के लिए संग्रहित आँकड़ों से तैयार सॉफ्टवेयर
Transfer = ट्रांसफर, अंतरण (विज्ञाचार्य, वीरेंद्र जैन), स्थानांतरण
Transistor = ट्रांजिस्टर
Translating Bridge = ट्रांसलेटिंग ब्रिज, अनुवाद-सेतु
Translation = ट्रांसलेशन, अनुवाद
Translator = ट्रांसलेटर, अनुवादक
Transliteration = ट्रांसलिटरेशन, लिप्यंतरण
Transmit = ट्रांसमिट, संचरण (वैतशआ)
Trap = ट्रैप, प्रपाश (वैतशआ)
Trigram Analysis = ट्राईग्राम एनालिसिस, तीन-तीन शब्दों के समूह में विश्लेषण

True Type Font = ट्रू टाइप फोंट
Typing Pattern = टाइपिंग पैटर्न, टंकण प्रतिरूप (वैतशआ)
Ultimate Computing Language = अल्टीमेट कंप्यूटिंग लैंग्वेज
Underline = अंडरलाइन, अधोरेखा
Unicode Consortium = यूनीकोड कंसोर्टियम, एकल-कूट संकुल
Unix = यूनिक्स, सिस्टम सॉफ्टवेयर
Unix Shell = यूनिक्स शैल, अनुप्रयोग भाषा
Unlock = अनलॉक, वि-तालकन (वैतशआ),ताला-मुक्त
Upgrade = अपग्रेड, उन्नयन
User Friendly = यूज़र फ्रेंडली, उपयोक्ता मैत्रीपूर्ण (वैतशआ), प्रयोक्ता मैत्रीपूर्ण (एस.वेंकटाचलम), उपयोक्ता मित्रवत, उपयोक्ता-अनुकूल
User Manual = यूज़र मैनुअल, उपयोक्ता मैनुअल
User Name = यूज़र नेम, उपयोक्ता-नाम
Utah Computer Fraud Act = उटाह कंप्यूटर फ्राड एक्ट, उटाह अभिकलित्र धोखाधड़ी अधिनियम
Utility = यूटीलिटी, उपयोगिता
Vaccum Cleaner = वैक्यूम क्लीनर, निर्वात क्लीनर
Vaccum Tube = वैक्यूम ट्यूब, निर्वात नालिका (वीरेंद्र जैन), निर्वात नली
Value = वेल्यू, मान
Variable = वेरिएबल, परिवर्ती (वैतशआ), चर्य (विज्ञाचार्य)
Variable Name = वेरिएबल नेम, परिवर्ती नाम,चर संज्ञा
Vector = वैक्टर, सदिश (वैतशआ), वाक्य ध्वनि के छोटे-छोटे बराबर के हिस्से
Ventura = वेंचुरा, रोमन सॉफ्टवेयर
Venus = वीनस, वेंचुरा सॉफ्टवेयर आधारित पैकेज
Version = वर्शन, प्रसंस्करण, आरूप (वैतशआ), आवृत्त (विज्ञाचार्य)
Vertical Keyboard = वर्टीकल की-बोर्ड, ऊर्ध्वाधर कुंजीपटल
Via Voice = वाया वोइज़, आईबीएम निर्मित आवाज पहचानक
Video = वीडियो, विडियो (वैतशआ), दृष्टव्य (विज्ञाचार्य)
Virtual Machine = वर्चुअल मशीन, आभासी यंत्र (वैतशआ)
Virus = वाइरस, दुष्कूट (विज्ञाचार्य), विषाणु (एस.वेंकटाचलम)
Virus Cleanup = वाइरस क्लीन-अप
Virus Counter = वाइरस काउंटर, वाइरस गणक
Virus Scanning Program = वाइरस स्कैनिंग प्रोग्राम, वाइरस क्रमवीक्षण प्रोग्राम
Virus Vaccine = वाइरस वैक्सीन, वाइरस टीका
Visual = विजुअल, चाक्षुक (वैतशआ), दृश्य
Visual Data = विजुअल डेटा, चाक्षुस डेटा
Visual Display Unit = विजुअल डिस्प्ले यूनिट, चाक्षुक प्रदर्श एकक (एस.वेंकटाचलम) चाक्षुष प्रदर्शन एकक (विज्ञाचार्य, वीरेंद्र जैन),
Voice-memo-recorder = वोइज़-मेमो-रिकार्डर
Voice Recognition = वोइज़ रेकॉग्निशन, वाक-अभिज्ञान, आवाज पहचानक, ध्वनि अभिज्ञाता
WAN = वान, वृहत क्षेत्र जालक्रम (वैतशआ)
Wazzu = वाज्जू, मेकरो वाइरस
Web = वेब

Web Development Support = वेब डेवलपमेंट सपोर्ट
Web Duniya = वेबदुनिया, पहला हिंदी पोर्टल, ब्राउजर प्रोग्राम
Web Page = वेब पेज, साइट
Whole Number = होल नंबर, पूर्णांक
Windows for Akshar = विंडोज फॉर अक्षर, हिंदी फोंट सॉफ्टवेयर
Win Script = विन स्क्रिप्ट, फोंट
Wireless Keyboard = वायरलेस की-बोर्ड, बेतार कुंजीपटल
Word Pad = वर्ड पैड
Word Perfect = वर्ड परफेक्ट
Word Processing = वर्ड प्रोसेसिंग,शब्द संसाधन (वि.मल्होत्रा, वैतशआ),शब्द-प्रक्रमण
Word Processor = वर्ड प्रोसेसर, शब्द संसाधित्र (वैतशआ)
Word Star = वर्ड स्टार
Worksheet = वर्कशीट
Work space = वर्क स्पेस
Worldwide = वर्ल्ड वाइड, विश्वव्यापक, विश्वव्यापी
Wrist Pad = रिस्ट पैड, कलाई पैड
Write Protected = राइट प्रोटेक्टेड, लेखन संरक्षित (एस.वेंकटाचलम), अलिखनीय, वाइरस से बचाने का उपाय
X-axis Roller = एक्स-एक्सिस रोलर, माउस का अवयव
Xenix = ज़ेनिक्स
XT Mode = एक्स टी मोड, एक्सटेंडेड टेक्नोलॉजी मोड, विस्तारित प्रौद्योगिकी मोड, कुंजीपटल के काम करने का मोड
Y-axis Roller = वाई-एक्सिस रोलर
Yahoo = याहू, ब्राउजर प्रोग्राम

compdict\compdic1.doc

7.7 अध्याय 7 की संदर्भ सूची

1. कंप्यूटर और संस्कृत कोश साहित्य, डॉ. पुष्प लता तनेजा, पृ. 11-37, 114-120
2. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग - एक परिचय,
वैतशआ, मानव संसाधन विकास मंत्रालय की बुकलेट
3. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की शब्दावलियाँ
4. हिंदी भाषा की लिपि-संरचना, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. 287-289
5. कंप्यूटर परिचालन तत्व, राम बंसल "विज्ञाचार्य ", मंगलाचरण

6. कंप्यूटर : क्या, क्यों और कैसे, राम बंसल "विज्ञाचार्य ", प्राक्कथन (पृ.v)
7. कंप्यूटर परिचालन तत्व, राम बंसल "विज्ञाचार्य ", मंगलाचरण
8. कंप्यूटर सामान्य ज्ञान एवं यूजर गाइड, राम बंसल "विज्ञाचार्य ", प्राक्कथन
9. कंप्यूटर संचार सूचना, जून,2003, संपादकीय, हरिशंकर व्यास
10. कंप्यूटर विकास, सितंबर,2003, संपादकीय, वेद प्रकाश पांडेय

CompDict.doc